अक्तूबर 2004
Rs. 12 /-
चन्दामामा

क्या आप इन
प्राचीन आश्चर्यों
को देख चुके हैं ?

enchanting
tamil nadu

प्रवेश

ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

& चन्दामामा

यह न्यूट्रीन - चन्दामामा ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का अन्तिम अंश है। ये प्रश्न तुम्हें रोचक लगेंगे और तुम्हारे खेल सम्बन्धी ज्ञान को बढ़ायेंगे। सही उत्तरों को ढूँढ़ो, प्रवेश पत्र को भरो और इस पृष्ठ को पाँच **न्यूट्रीन चॉकोलेट एक्लेयर्स रैपर्स** के साथ अन्तिम तिथि के पहले **न्यूट्रीन - चन्दामामा प्रतियोगिता, चन्दामामा इंडिया लि., ८२, डिफेंस आफिसर्स कॉलोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७** के पते पर भेज दो।

द्वितीय पुरस्कार

कैलकुलेटर्स

यह अखिल भारत प्रतियोगिता है। हर महीने प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार में क्रमशः ३ कोनिका कैमरे, १० कैलकुलेटर्स तथा ५० न्यूट्रीन मिठाई के डलिये हैं। पाँच मासिक प्रतियोगिताओं के अन्त में छठी प्रतियोगिता के लिए एक बम्पर ड्रा है और विजेता को अन्य सामान्य पुरस्कारों के अतिरिक्त एक पर्सनल कम्प्यूटर दिया जायेगा। सभी छः महीनों में भाग लेने पर ही बम्पर ड्रा में शामिल होने के लिए योग्य हो सकते हैं। बम्पर ड्रा का परिणाम डाक द्वारा दिसम्बर में घोषित किया जायेगा।

न्यूट्रिन - चन्दामामा ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता -६

प्रश्नों को ध्यान से पढ़ो और प्रत्येक प्रश्न के लिए दिये गये रिक्त स्थानों में सही उत्तर पर टिक [✓] का निशान लगाओ।

१. केवल ओलम्पिक खेल का नाम बताओ जिसमें भारत ने अब तक आठ स्वर्ण पदक जीते हैं।
   ☐ भारोत्तोलन ☐ टेनिस ☐ हॉकी

२. भारतीय हॉकी खिलाड़ी का नाम बताओ जिसने सन् १९२८, १९३२ और १९३६ में आयोजित तीन लगातार ओलम्पिक्स में ३६ गोल किये।
   ☐ धनराज पिलई ☐ मिल्खा सिंह ☐ ध्यान चन्द

३. भारतीय महिला का नाम बताओ जिसने सन् २००० में सिडनी ओलम्पिक्स में भारोत्तोलन में ताम्र पदक जीता।
   ☐ कुंजुरानी देवी ☐ करनाम मालेश्वरी ☐ शाइनी विल्सन

४. ओलम्पिक महिला डिस्कस थ्रो में विश्व कीर्तिमान किसने बनाया?
   ☐ मारटिना हेलमान ☐ इलोना स्लुपियानेक ☐ ट्राइन हीट्सटेड

५. इस अंक में न्यूट्रीन विज्ञापन में सभी "५" अक्षरों का पता लगाओ।
   ☐ ४ ☐ ३ ☐ २

क्या तुम्हें मालूम था?

टग ऑफ वार सन् १९०० में पेरिस गेम्स में पहली बार आरम्भ किया गया और केवल पाँच ओलम्पिक खेलों तक यह जारी रखा गया।

<u>प्रतियोगिता के नियम:</u> ● न्यूट्रीन, चन्दामामा के कर्मचारी तथा उनके सम्बन्धी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते ● निर्णायकों का चुनाव न्यूट्रीन का एक मात्र विशेषाधिकार होगा ● केवल भारतीय मूल के १५ वर्ष से नीचे की आयु के बच्चे ही प्रतियोगिता में भाग ले सकते ● केवल न्यूट्रीन को अधिकार होगा कि वह प्रतियोगिता को और आगे बढ़ाये या पहले बन्द करे ● प्रतियोगी की आयु के प्रमाण के लिए जन्मतिथि प्रमाणपत्र मान्य होगा ● सही प्रविष्टियों में से ड्रा द्वारा विजेताओं का चुनाव होगा ● विजेताओं को व्यक्तिगत रूप से सूचित किया जायेगा ● पुरस्कृत वस्तुओं के स्थान पर नकद द्वारा पूर्ति नहीं की जायेगी ● पुरस्कृत वस्तुओं की गुणवत्ता का आश्वासन सम्बद्ध उत्पादकों का होगा ● एक प्रतियोगी प्रत्येक महीने में एक प्रविष्टि भेज सकता ● वह किसी एक प्रतियोगिता में या सभी छः प्रतियोगिताओं में भाग ले सकता ● प्रविष्टि पत्रों के अतिरिक्त कोई अन्य पत्र-व्यवहार नहीं स्वीकार किया जायेगा ● कूपन पर तुम्हारे हस्ताक्षर करने का अर्थ होगा कि कूपन पर दिये गये नियमों से तुम सहमत हो ● अन्तिम तिथि के बाद प्राप्त प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जायेगा ● यदि किसी प्रतियोगिता में सभी प्रविष्टियाँ सही नहीं हैं, तब अधिकतम सही उत्तरों के आधार पर विचार किया जायेगा और उन्हीं में से ड्रा किया जायेगा ● निर्णायकों के सभी निर्णय अन्तिम माने जायेंगे।

अन्तिम तिथि: ३१ अक्तूबर २००४

नाम :..

उम्र :.................. कक्षा :.................... जन्मतिथि :..........................

घर का पता तथा पिन कोड ....

....

हस्ताक्षर..................................

India's largest selling sweets and toffees.

चन्दामामा

सम्पुट - १०८ अक्तूबर २००४ सञ्चिका - १०

विशेष आकर्षण

भल्लूक मांत्रिक १३

ज्योतिषी को ज्योतिष १९

अन्यदेशों की अनुश्रुत कथाएँ २६

विष्णु पुराण ४५

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

''उन्हें हमें अभी से पकड़ना होगा''

जब मेजर राज्यवर्द्धन सिंह राठौर ने एथेन्स खेलों में रजत पदक जीता तब एक इतिहास रचा गया। जब १०८ वर्ष पूर्व आधुनिक खेलों की शुरूआत हुई, तब से भारत को यह एक मात्र व्यक्तिगत ओलम्पिक रजत पदक प्राप्त हुआ है। सारे देश ने एक जुट होकर इस श्रेष्ठ निशानेबाज प्रतियोगी का उस घड़ी के नायक के रूप में अभिवादन किया।

यदि हम हॉकी में, जो एक टीम-खेल है, प्राप्त स्वर्ण पदकों की कतार को छोड़ दें तो हमारे खजाने में सिर्फ मुट्ठी भर व्यक्तिगत ओलम्पिक ताम्र पदक मिलेंगे। जो भी हो, हाल में उस खेल में भी अपनी श्रेष्ठता बनाये रखने में हम अक्षम रहे हैं।

भारत के एथेन्स में निराशाजनक प्रदर्शन की शल्य-परीक्षाकरने का यह समय नहीं है। अनिवार्य आवश्यकता है भविष्य के बारे में स ोचने की कि कैसे हमारे युवा और होनहार पुरुष और महिला खिलाड़ियों का मानदण्ड विश्व-श्रेणियों की तुलना में गणना के स्तर तक पहुँचाया जाये।

भारत में खेल-कूद की शिक्षण-संस्थाओं की कमी नहीं है, जो केवल विशेषज्ञता का प्रशिक्षण देती हैं और सामान्य शिक्षण की व्यवस्था नहीं करतीं। वर्तमान दृश्य विधान में इन शिक्षण-संस्थाओं को स्नातक - योग्यता तथा नौकरी के अवसरों को भी सुसाध्य बनाना चाहिये,जिसके बिना खेलकूद में प्रशिक्षण का महत्व गौण रह जायेगा।

भारत ने एशियाई खेलों का तीन बार आयोजन किया है; और इसे २०१० में कॉमन वेल्थ खेलों का आतिथ्य करना है। हमलोग ओलम्पिक खेलों को भी निमन्त्रित करने पर विचार कर रहे हैं। यदि हमारे भावी व्यायामियों को देश के लिए कुछ गौरव अर्जित करना है तो ''उन्हें हमें अभी से पकड़ना होगा'' अथवा यह कभी नहीं होगा।

सम्पादक: विश्वम

आदिवासी बच्चों के लिए एक पत्रिका का जन्म

चन्दामामा,अपने ५७ वर्ष के जीवनकाल में संथाली भाषा में 'चन्दोमामो' के आरम्भ करने के साथ प्रकाशन की दुनिया में एक नये मील-पत्थर पर पहुँच गया।

चन्दोमामो आदिवासी भाषा में बच्चों की सबसे पहली पत्रिका है जो पूर्ण रुप से और बहुरंगी है। यह गुरु गोमके पंडित रघुनाथ मुर्मु द्वारा विकसित ओलचिकी लिपि में मुद्रित है।

उद्घाटन - अंक का औपचारिक विमोचन १५ अगस्त२००४ को भुवनेश्व र में उड़ीसा के मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक द्वारा किया गया, जिन्होंने हमारे इस नये अभियान को आशीर्बाद देने तथा एक उदात्त निमित्त का दायित्व स्वीकार करने के लिए हमें बधाई देने की बड़ी कृपा की। हम उनके कृतज्ञ हैं।

संथाली संस्करण संथाली चन्दोमामो समिति की सहायता तथा सहयोग से सम्भव बन पाया है, जिसकी चेयरपर्सन श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, एम.एल.ए हैं। हम समिति के बहुत ऋणी हैं। इस अबसर को अंकित करने के लिए समिति ने थकर बापा आदिवासी होस्टल में एक वृक्ष-रोपण समारोह का आयोजन किया, जँहा साल के अनेक पौधे रोपे गये।

हम सभी पत्रकारों के भी आभारी हैं जिन्होंने इस अनोखी बाल-पत्रिका के आविर्भाव को खुले दिल से प्रसारित-प्रकाशित किया।

प्रकाशक

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (मई)

मंत्री की बुद्धिमानी

राजा को दुखी देख कर उसके बुद्धिमान मंत्री ने एक समाधान सोचा।

उसका पड़ोसी राज्य केसरगढ़ पहाड़ियों और पत्थरों से भरा था और वहाँ पानी का हमेशा अभाव रहता था। लेकिन मंत्री के राज्य में अनेक झीलें सालों भर पानी से भरी रहती थीं। केसरगढ़ के राजा चन्द्रकुमार ने अनेक बार अपने राज्य में पानी देने के लिए अनुरोध भी किया था।

मंत्री ने राजा को सलाह दी कि यदि केसरगढ़ का पड़ोसी राजा अपने राज्य से आवश्यकता भर पत्थर और चूना लेने दें तो वे अपने राज्य के लिए हमारी झीलों से पानी ले जा सकते हैं। जिन्हें मकान चाहिये वे केसरगढ़ के पत्थरों और चूनों से अपने आप मजदूरी करके अपने लिए मकान बना सकते हैं। राज्य की ओर से मकान बनाने के लिए जमीन, राज-कारीगर और पत्थर व चूना लाने के लिए बैलगाड़ियों का इन्तजाम क र दिया जायेगा। राजा मंत्री की सलाह से सहमत हो गया।

मंत्री ने उन सभी उपस्थित व्यक्तियों को, जो मकान के लिए आये थे, यह योजना बताई। वे सभी पड़ोसी राज्य से पत्थर और चूना लाकर अपना-अपना मकान बनाने के लिए तैयार हो गये।

मंत्री ने पड़ोसी राजा चन्द्रकुमार के मंत्री के समक्ष यह प्रस्ताव रखा। केसरगढ़ के मंत्री और राजा दोनों इस प्रस्ताव पर बड़े प्रसन्न हुए। शीघ्र ही इस योजना को अमल में लाया गया और एक वर्ष पूरा होते-होते राज्य के सभी बेघर लोगों का अपना-अपना मकान हो गया। राजा ने मंत्री की बुद्धिमानी की प्रशंसा की।

मिथिलेश बढ़ई, क्वाटर न.२/८
सड़क-३०, सेक्टर-५, भिलाई (छ-ग) जि.-दुर्ग
पिन-४९१७७१

देवी की महिमा

गढ़बाल नामक गांव में सब के सब छोटे-छोटे किसान हैं। वे अनपढ़ और मासूम हैं। हर एक का घर घास-फूस से ढका हुआ होता है। गांव के मुन्सिफ और पटवारी के घर मात्र खपरैल के हैं। गांव के बीचों बीच देवी का मंदिर है।

गांव के किसानों के बीच एकता का अभाव है। हर छोटी-सी बात पर भी अक़्सर वे लड़ते-झगड़ते रहते हैं।

गर्मी के दिनों में एक दिन एक झोंपड़ी में आग लग गयी और लपें निकलने लगीं। ग्रामीण ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, एक-दूसरे-को सावधान करने लगे और पास ही के तालाब से पानी लाकर आग बुझाने लगे। वे दूसरों के घरों पर भी पानी उछालने लगे, जिससे आग न फैले।

जब वे संतुष्ट होकर घर लौटने लगे तब मंदिर के पुजारी ने उनसे रुकने को कहा। पुजारी ने उनसे कहा, ''आप सब लोगों ने समझा नहीं होगा। हमारी देवी ने अपनी महिमा दिखायी और हमें जगा दिया और बचा लिया।''

पुजारी की बातें ग्रामीणों की समझ में नहीं आयीं। सब मौन रह गये। तब पुजारी ने ऊँची आवाज़ में उनसे कहा, ''हमारी देवी इस घोर अंधकार में लपटों के द्वारा प्रकाश नहीं दिखातीं तो हम जान नहीं पाते कि कहाँ आग लगी है। तब आग बुझाना हमसे संभव नहीं हो पाता। इससे भी बड़ी बात यह है कि सबने मिलकर आग बुझायी। यह एकता सदा बनी रहे, यही देवी का उद्देश्य है।'' ***-वरलक्ष्मी***
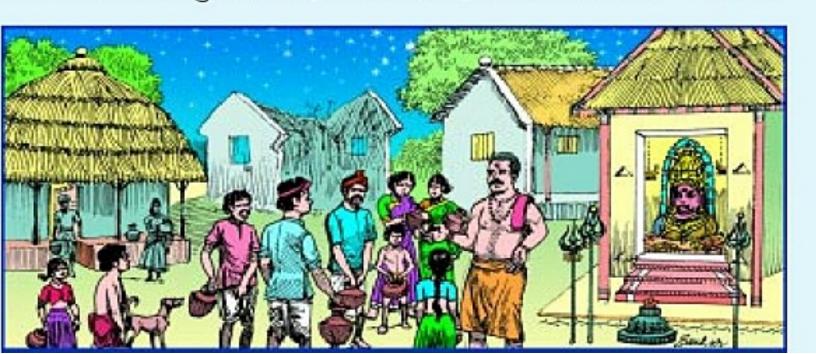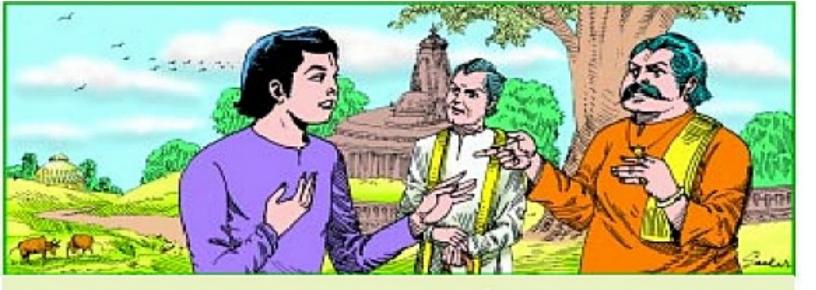
अचूक वाणी

हरि और गिरि दोनों युवक हैं। दोनों पड़ोसी हैं। दोनों बेरोज़गार हैं। परंतु दोनों की व्यवहार शैली में आकाश-पाताल का अंतर है। हरि घर में माँ की मदद करता है और पिता का बाहर का काम भी निबटाता है। गाँव के लोगों के साथ शिष्टतापूर्वक पेश आता है। अपनी उम्र के युवकों के साथ भी उसका बरताव बड़ा ही दोस्ताना होता है। सब के सब हरि की प्रशंसा करते हुए थकते नहीं। सब माँ-बाप यही कहते हैं कि बेटा हरि जैसा हो।

गिरि का व्यवहार तो इससे बिलकुल ही भिन्न होता है। कोई सहायता मांगे भी तो वह नहीं करता। अधिक समय तक वह सोता रहता है। बड़ों का आदर नहीं करता। जब देखो,अनावश्यक ही किसी न किसी से झगड़ा मोल लेता है। सब गिरि की भर्त्सना करते हैं। सब माँ-बाप यही कहते हैं कि गिरि जैसा बेटा किसी का न हो।

गिरि बखूबी जानता है कि वह बदनाम है, पर वह यह मानने के लिए तैयार नहीं किसका कारण उसकी व्यवहार शैली है। वह सबसे यही कहता है कि हरि की वजह से ही वह बदनाम है। वह हरि को गालियाँ देता रहता है और उसके अनर्थ की कामना करता है। फिर भी हरि गिरि से नाराज़ नहीं है। कोई अगर कहे कि गिरि बुरा है तो वह कहता है ,''सब का व्यवहार एक समान नहीं होता। गिरि की तुलना मुझसे करके उसका अपमान किया जाता है। इसी से वह मुझसे नाराज़ रहता है, अन्यथा हम दोनों अच्छे दोस्त हैं।''

एक दिन गिरि का मामा शंकर उसके घर आया। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद शंकर ने गिरि से कहा, ''बेटे, तुम बड़े होशियार हो। हमारे गाँव के ज़मींदार को दो फुर्तीले जवानों की ज़रूरत है। एक काम करेगा और दूसरा ख़बरें सुनाता रहेगा। तुम ज़मींदार को ख़बरें सुनाते

महीधर
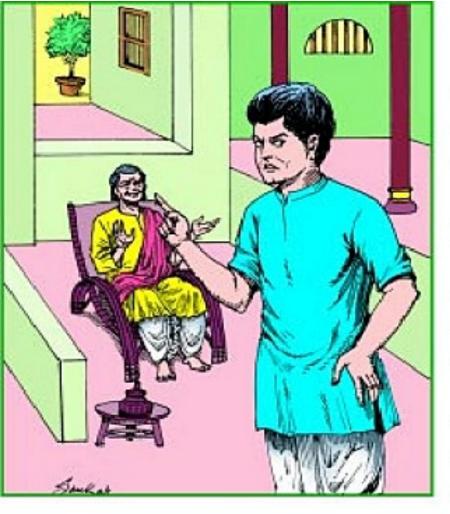
रहोगे तो तुम्हारा पड़ोसी हरि काम करता रहेगा। परंतु ज़मींदार की एक शर्त है। दोनों साथ-साथ जाओगे, तभी यह नौकरी मिलेगी। वे अच्छा-ख़ासा वेतन भी देंगे।''

''अगर मैं अकेले ही जाऊँ तो क्या आपके ज़मींदार मुझे नौकरी नहीं देंगे?'' गिरि ने पूछा।

''नहीं। जमींदार उन जवानों को ही काम पर लगायेंगे, जो वेतन के मामले में एतराज जाहिर नहीं करते। तुम्हारा दोस्त हरि बड़े ही अच्छे स्वभाव का है। तुम दोनों मिलकर जाओगे तो अवश्य ही तुम दोनों को एकसाथ नौकरियाँ मिलेंगी। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम दोनों का भविष्य उज्ज्वल होगा।'' शंकर ने यों गिरि को समझाया।

''मुझे नौकरी मिले या न मिले, मुझे इसकी परवाह नहीं है, पर किसी भी हालत में हरि को नौकरी मिलनी नहीं चाहिये।'' आवेश-भरे स्वर में गिरि ने कहा।

''हरि तो बहुत अच्छा जवान है। तुम उससे इतना जलते क्यों हो?'' शंकर ने पूछा।

'' उसका ख्याल है कि मेरे साथ उसकी तुलना करके सब लोग मुझे बुरा ठहरायें। इसलिए मेरी तरक्की हो या न हो, उसकी तरक्की होनी नहीं चाहिये।''

शंकर को यह समझने में देर नहीं लगी कि गिरि ईर्ष्यालु है। उसने उसी दिन हरि से मिलकर पूरा विषय बताया और कहा, ''तुम दोनों के लिए यह सुनहरा अवसर है। किसी तरह तुम गिरि को समझा-बुझाकर उसे मनाना।''

हरि ने इसके लिए 'हाँ' कर दिया और गिरि से मिलने गया। हरि की बातें उस ने ध्यान से सुनीं और कहा, ''मैं बहुत लोगों से सुन चुका हूँ कि ज़मींदार अच्छा आदमी नहीं है। कुछ दिनों के बाद मुझसे काम करने के लिए कहेगा और तुम्हें ख़बरें सुनाने का काम सौंपेगा। फिर हम पर यह दोष मढ़ेगा कि मैं ठीक तरह से काम नहीं कर रहा हूँ और तुम ख़बरें भी सही-सही सुना नहीं रहे हो। देखते-देखते हमें नौकरी से हाथ-धोना पड़ेगा। इसीलिए मैंने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।''

''मुझे लगता है कि यह केवल तुम्हारा भ्रम है। एक और बार सोच कर, देखो '' हरि ने कहा।

इसपर चिढ़ते हुए गिरि ने कहा, ''ठीक है,

समझ लेना कि यह मेरा भ्रम है या मेरी कल्पना मात्र है, पर याद रखना, मेरी वाणी अचूक है। जो कहता हूँ, होकर रहता है। मेरे घर के सब लोग भी यही कहते रहते हैं कि मेरे मुँह से जो बात निकलती है, वह होकर ही रहती है। एक हफ्ता पहले मुझे पेयूष खाने की इच्छा हुई। मैंने कहा कि दूध फट जाए तो अच्छा होगा। बस, उस दिन का दूध फट गया। तीन दिन पहले माँने ज़ोर डाला कि मैं पिछवाडे के पौधों को पानी दूँ, पर मेरे मुँह से निकल पड़ा कि बारिश हो तो अच्छा होगा। सचमुच ही ज़ोर की बारिश हुई। अब मैंने कहा कि ज़मींदार दुष्ट है। मेरी यह बात भी सच निकलेगी। मेरी बात का विश्वास करना।''

''तुम्हारी कल्पना सच है या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, पर मुझे इस बात का दुख है कि नौकरी का मौका मेरे हाथ से फिसल गया,'' परेशान हरि ने कहा।

''मौक़ा तो मेरे हाथ से भी फिसल गया। तुम्हारा यह समझना है कि मेरी वजह से तुमने अच्छा अवसर खो दिया। परंतु यह सच नहीं है। तुम्हें बहुत ही जल्दी निकट भविष्य में इससे भी बेहतर मौक़ा मिलेगा। तब इस मौक़े को खोने पर तुम्हें चिंता के बदले बड़ा ही आनंद होगा। एक और बार जोर देकर कहता हूँ, सुनो, मेरी वाणी अचूक है, मेरी बात होकर रहेगी।'' यो गिरि ने अपना उद्देश्य स्पष्ट रूप से बता दिया।

सचमुच चार ही दिनों में एक आश्चर्य - भरी घटना घटी। हरि के दूर के रिश्तेदार केशव ने ख़बर भिजवायी कि वह उससे आकर मिले। केशव नगर में रहता है। समुद्री यात्रा करते हुए उसने

अनेक प्रकार के व्यापार किये और बहुत बड़ी संपत्ति कमायी। पर उस बेचारे की कोई संतान नहीं थी। बूढ़ा हो जाने के कारण वह अपने ही घर में आराम कर रहा है। उसकी अदम्य इच्छा है कि अपनी संपत्ति का उपयोग परोपकारी कार्यों के लिए करूँ। इसके लिए समर्थ और सुशील युवक की ज़रूरत है तो किसी ने हरि का नाम सुझाया। वह चाहता है कि हरि को अपनी संपत्ति के चौथे हिस्से का हकदार बनाऊँ, उसे अपने ही साथ रखूँ और शेष संपत्ति का उपयोग उसके द्वारा परोपकार के लिए करूँ। ख़बर मिलते ही हरि, केशव से मिलने नगर गया। केशव को हरि बहुत अच्छा लगा। फिर कुछ समय बाद हरि अपना गांव आया और उन सबको मूल्यवान भेंट दीं, जिन्होंने उसकी सहायता की थी। भेंट पानेवालों में माता-पिता, भाई-बहन, गुरु और मित्र थे, पर गिरि नहीं था।

गिरि, हरि से मिला और गर्व से कहने लगा। ''मेरी अचूक वाणी के कारण ही तुम इस उन्नत स्थिति पर पहुँच गये। लोग तो तुम्हारे अच्छे स्वभाव की तारीफ़ करते हुए थकते ही नहीं, पर आश्चर्य की बात तो यह है कि तुमने मुझे भुला दिया और मुझे कोई भेंट नहीं दी।''

यह सुनते ही हरि ने अप्रसन्न स्वर में कहा, ''तुम चाहते थे कि मुझे नौकरी नहीं मिले। इसी लिए तुमने अपनी नौकरी का मौक़ा भी हाथ से जाने दिया। वाणी अचूक होती हो तो इसके लिए हृदय का पवित्र और निर्मल होना नितांत आवश्यक है। वह तुममें है ही नहीं। उस दूध का फटना, बारिश का होना- एक तुम्हारे स्वार्थ के लिए और दूसरा काम से बचने के लिए कहे गये शब्द मात्र हैं। एक और बात है; अगर किसी के कहे बुरे काम सफल होते हों तो ऐसे लोग अचूक वाणी के नहीं कहलाते। लोग यही कहेंगे कि उसकी जीभ पर काला धब्बा है। अब रहा, भेंट का विषय। तुम्हें भेंट देने का मतलब है अयोग्य का सम्मान करना। इससे मैंने जिन शेष लोगों का आदर किया, उनके महत्व को घटाना है। इसीलिए तुम्हारे लिए मैं कोई भेंट नहीं लाया।''

उसके इस उत्तर पर गिरि कुछ भी बोल नहीं पाया और सिर झुकाकर वहाँ से चलता बना।
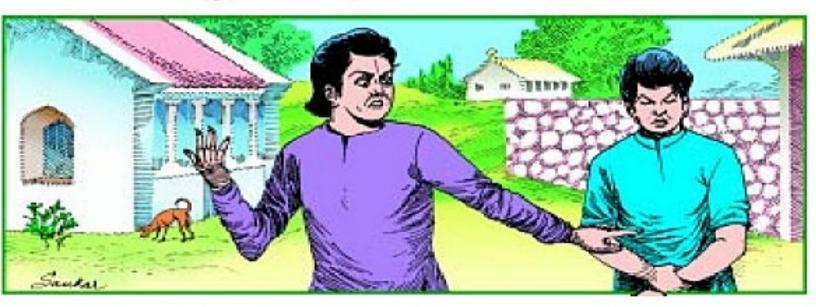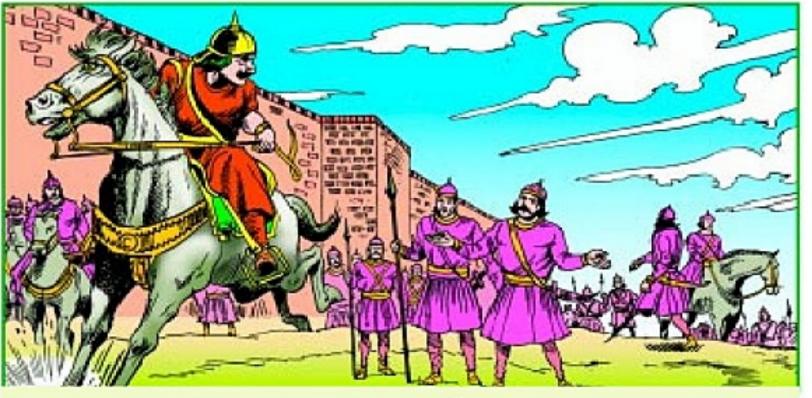
भल्लूक मांत्रिक

12

(राजा दुर्मुख के दुर्ग पर अधिकार करनेवाले सामंत ने बधिक भल्लूक आदि पर अपने सैनिकों को उकसाया। डाकू नागमल्ल ने सेनापति को बताया कि वह राजा दुर्मुख को बंदी बनाकर ले आया है। इस पर सामंत बधिक भल्लूक के पास आया। राजा दुर्मुख क्रोध में आकर सामंत राजा पर टूट पड़ा। सामंत भागने लगा। इसके बाद....)

सामंत भूपति ने अपने घोड़े को रोका। अपना पीछा करनेवाले राजा दुर्मुख का सामना करने का प्रयत्न किये बिना क़िले के खुले द्वार की ओर घोड़े को दौड़ाने लगा। सेनापति ने देखा कि उसका राजा अपने शत्रु को देख भाग रहा है, उसने भी अपने सैनिकों को क़िले की ओर मोड़ दिया।

तभी सेनापति के दो साहसी सैनिक उससे बोले, ‘‘मालिक! हम पर हमला करनेवाले सैनिकों की संख्या दस से ज़्यादा नहीं है। इसलिए हम नये व पुराने राजा को आपस में लड़कर मरने देंगे। इस बीच हम इन थोड़े से सैनिकों को घेरकर इनका अंत कर सकते हैं। इसके बाद हमारा सामना करने के लिए कोई न रहेगा, तब आप खुद उदयगिरि के राजा बन सकते हैं।’’

सैनिकों के मुँह से ये बातें सुनने पर सेनापति के मन में राज्य का लोभ पैदा हो गया। उसने अपने घोड़े को घुमाकर हाथी पर सवार बधिक

टुकड़े कर दूँगा।'' यों चेतावनी देकर वह क़िले की ओर चल पड़ा।

उग्रदण्ड के रवाना होते ही राजा बनने का सपना देखनेवाला सेनापति झट से अपने घोड़े को घुमाकर अपने सैनिकों से बोला, ''सुनो, हम लोग राक्षस और परशु धारण किये हुए बधिक भल्लूक का सामना कर किसी भी हालत में अपने प्राण बचा नहीं सकते। क़िले की दीवारें ही हमारी रक्षा कर सकती हैं। क़िले में घुसते ही हम उसके दर्वाजे बंद कर देंगे।'' यों कहकर वह बेतहाशा अंधाधुंध भागने लगा।

इसके बाद हाथी पर सवार बधिक भल्लूक, डाकू नागमल्ल, दुर्मुख के अंग रक्षक भी राक्षस उग्रदण्ड के पीछे अपने वाहनों को दौड़ाते क़िले के द्वार तक पहुँच गये थे कि इस बीच सामंत राजा अपने थोड़े सैनिकों के साथ क़िले के भीतर पहुँचा और झट से उसने क़िले के दर्वाजे बंद करवा दिये। थोड़ी देर बाद पीछे से सामंत राजा के जो सैनिक आये, वे अपने प्राणों के डर से, किले के बाहर हाहाकार मचाते क़िले की दीवारों की ओट में तितर-बितर हो भाग गये।

भल्लूक आदि की ओर देखा। बधिक भल्लूक ने फरसा उठाकर डाकू नागमल्ल, उसके अनुचर तथा दुर्मुख के अंग रक्षकों को चेतावनी देकर उच्च स्वर में कहा, ''सुनो, दुस्साहस करके राजा दुर्मुख अपने राज्य के साथ अपने प्राणों को भी खो जा रहा है। हमारी सहायता के बिना इतने सारे शत्रुओं के बीच अकेले ही जाकर वह अपनी जान गँवाने जा रहा है। अब हमारे सामने जो भी शत्रु आये, उसे काटते जायेंगे, तभी हम लोग राजा दुर्मुख को बचा सकते हैं।''

ये बातें सुन राक्षस उग्रदण्ड पत्थरवाले गदे को ऊपर उठाकर भयंकर रूप से गरज उठा, ''अबे सामंत सूर्य भूपति के सैनिको, सावधान! राजा दुर्मुख की तुम लोगों ने कोई हानि पहुँचा दी तो याद रखो, मैं इसी वक़्त तुम सब को टुकड़े -

राक्षस उग्रदण्ड ने सब से पहले क़िले के दर्वाजों तक पहुँचकर उन पर ज़ोर से अपने पत्थरवाले गदे का प्रहार किया। पर उसका कोई असर न होते देख वह चकित हो बधिक भल्लूक से बोला, ''बधिक भल्लूक! सामंत का यह सेनापति जैसा कायर है, वैसे चतुर भी मालूम होता है। अब हम लोग क्या करें? राजा दुर्मुख

क़िले के अन्दर अकेले अपने दुश्मनों के बीच फँस गया है। उसके प्राणों की तो मुझे कोई चिंता नहीं है, मगर मेरी चिंता तो वास्तव में इस बात की है कि तुम उसका सिर भल्लूक मांत्रिक को कैसे सौंप सकते हो?''

राक्षस उग्रदण्ड के मुँह से ये शब्द सुनकर बधिक भल्लूक एक बार आपाद मस्तक कांप उठा। क्योंकि अगर वह राजा दुर्मुख का सर काटकर न ले जायेगा तो उसे ज़िंदगी - भर भल्लूक मांत्रिक भल्लूक के रूप में ही छोड़ देगा। मानव का जन्म धारण कर मानव की ज़िंदगी कई साल तक जीकर आख़िर उसे भल्लूक के रूप में जंगलों में किन्हीं शहद की मक्खियों के छत्तों को खाते हुए जीना होगा, इससे बढ़कर उसकी ज़िंदगी के लिए सबसे बड़ा अभिशाप क्या हो सकता है?

यों विचार कर बधिक भल्लूक ने किसी भी तरह से राजा दुर्मुख के प्राण बचाने का अपने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया, तब फरसा उठाकर चिल्ला उठा - 'हे मेरे सिरस भैरव!' तब दुर्ग के दर्वाजों पर अपनी सारी ताक़त लगाकर प्रहार किया। दुर्ग के दर्वाजे मज़बूत थे, जिन पर लोहे की भारी परत चढ़ी थी, जिससे दर्वाजों पर उस वार का कोई प्रभाव न पड़ा, साथ ही बधिक भल्लूक के हाथ का परशु उछलकर दूर जा गिरा।

हाथी पर आगे बै ठा हुआ जंगली युवक उछलकर नीचे कूद पड़ा, दौड़कर परशु कोअपने हाथ में ले चिल्ला उठा - ''मालिक! नाहक़ जोश में आकर भल्लूक मांत्रिक के जादूवाले परशु को मत तोड़ो। अगर हमें क़िले के भीतर घुसना ही है तो इन बंद दर्वाजों को जलाकर राख कर देना ही एक मात्र उपाय है।''
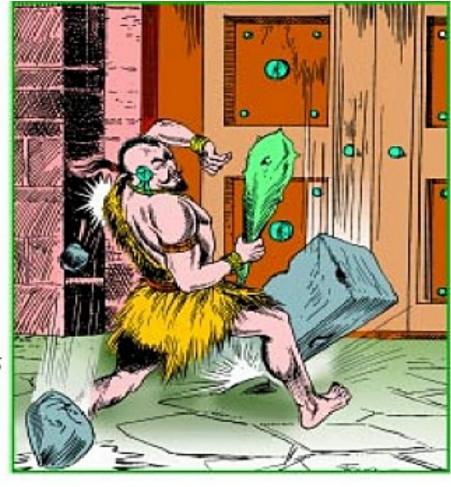
''अरे जंगली सेवक! तुम्हारी सलाह तो बड़ी अच्छी सूझ-बूझ से भरी हुई है! मगर इस बीच सामंत सूर्य भूपति राजा दुर्मुख का वध कर बैठे तो मेरी हालत क्या होगी? क्या तुमने यह भी सोचा?'' बधिक भल्लूक ने गुस्से में आकर कहा।

''हाँ, यह बात तो सच है।'' यों कहते राक्षस उग्रदण्ड पत्थरवाला गदा ऊपर उठाकर चार-पाँच क़दम पीछे हटा। फिर उछलते हुए जाकर क़िले के द्वार पर जोर से प्रहार किया।

राक्षस के मजबूत गदा के प्रहार से क़िले की दरारोंवाली दीवार का थोड़ा हिस्सा टूट गया, और दीवार के पत्थर धम्म से नीचे आ गिरे। राक्षस

उग्रदण्ड, बधिक भल्लूक आदि इस डर से कि कहीं पूरी दीवार टूटकर उन पर गिर न जाये, वे दूर भाग गये। तब सबने सर उठाकर ऊपर देखा।

उस वक़्त क़िले की दीवार पर एक दृश्य को देख सब लोग विस्मय के साथ एक दम डर भी गये। काली पोशाक पहने एक बड़ा बंदर दीवार पर बैठा था। उसके हाथ में एक लंबा मंत्र दण्ड था। उसकी मूठ पर एक ही हीरे में खचित भालू का सिर चमक रहा था।

बंदर को तथा उसके हाथ में मंत्र दण्ड को देख बधिक भल्लूक ने ज़ोर से दांत किटकिटाये, तब उच्च स्वर में कहा- "अबे, तुम सचमुच बंदर हो या कोई पिशाच हो? महान शक्तिशाली भल्लूक मांत्रिक का मंत्रदण्ड तुम्हारे हाथ में कैसे आ गया? जल्दी-जल्दी सच्ची बात बताओ, वरना..."

यह सवाल सुनकर बंदर कर्कश स्वर में चीख उठा, तब उसने पूछा, "अबे भल्लूक रूपधारी, तुम सचमुच भालू हो या कोई पिशाच हो?"

इस पर बधिक भल्लूक क्रोध में आ गया और अपना परशु उस पर फेंकने को हुआ, तब राक्षस उग्रदण्ड ने उसे रुकने का आदेश देकर धीमी आवाज़ में समझाया - "बधिक भल्लूक! तुम जल्दबाजी में आकर यह अनर्थ न कर बैठो। मुझे संदेह है कि भल्लूक मांत्रिक किसी ख़तरे में फंस गया है। पहले हम इस पिशाच बंदर के द्वारा पता लगायेंगे कि आख़िर उस पर क्या बीता है?"

बधिक भल्लूक अपने हाथों से एक साथ दोनों कान बंद करके राक्षस उग्रदण्ड से बोला, "उग्रदण्ड! अब इस कमबख़्त मर्कट के साथ बात करने से कोई लाभ नहीं है। क़िले के भीतर अभी तक राजा दुर्मुख ज़िंदा है या सामंत के हाथों मर गया है, पता नहीं चलता है। अगर हम क़िले के दर्वाजे तोड़ न पाये तो कम से कम हमें दीवार फांदकर भीतर जाना होगा। इसका उपाय क्या है?"

उग्रदण्ड विस्मय का अभिनय करते हुए बधिक भल्लूक को देख बोला, "बधिक भल्लूक! लगता है कि तुम अभी तक वास्तविक बात समझ न पाये! अपने को माया मर्कट बतानेवाला यह दुष्ट अगर भल्लूक मांत्रिक का मंत्र दण्ड पा सका है तो निश्चय ही अब तक मांत्रिक अपने प्राण खो बैठा होगा! ऐसी हालत में तुम क्यों राजा दुर्मुख के वास्ते अनावश्यक मुसीबत में फँस जाना चाहते हो? चलो, हम जंगल के किसी पहाड़ी प्रदेश में

जाकर अपना समय बितायेंगे।''

''बधिक भल्लूक प्रभु! राक्षस उग्रदण्ड महाशय की सलाह तारीफ़ के क़ाबिल है!'' यों कहते डाकू नागमल्ल हाथी पर से नीचे कूद पड़ा;अपने दोनों अनुचरों और अंग रक्षकों को भी हाथी पर से नीचे उतर जाने की सलाह देते हुए बोला, ''बताओ, राक्षस उग्रदण्ड महाशय की सलाह कैसी है? हम सब लोग जंगल में एक दल बांधकर रहें तो हमें जंगलों में राहगीरों को लूटते देख रोकनेवाला इस दुनिया भर में कोई न होगा।''

बधिक भल्लूक की आँखें क्रोध के मारे लाल हो उठीं, वह बोला, ''अरे जंगली सेवक! यह डाकू नागमल्ल भागकर कहीं न जाये, तुम अपने तीर का निशाना बना लो।'' फिर बाक़ी लोगों से बोला, ''मैं भल्लूक मांत्रिक तथा महान साहसी कालीवर्मा नामक युवक की खोज करना चाहता हूँ। तुम लोगों में से जो मेरे साथ चलने को तैयार हो, वह हाथ उठाये!''

राक्षस उग्रदण्ड को छोड़ बाक़ी स ब ने स्वीकृतिसूचक अपने हाथ उठाये। जंगली ने शंका भरी आवाज़ में पूछा, ''भल्लूक साहब! यह डाकू नागमल्ल और इसके अनुचर हमारे साथ चलने की स्वीकृति दे रहे हैं। मगर हम इन पर कैसे यक़ीन करें?''

''अगर उन पर विश्वास करना ख़तरे से खाली नहीं है तो यहीं पर उनके सर काट डालूँगा। उग्रदण्ड! तुम्हारा क्या निर्णय है? तुमने पहले बताया था कि भल्लूक मांत्रिक महाराज से तुम्हारा अपना कोई काम भी है?'' बधिक भल्लूक ने पूछा।
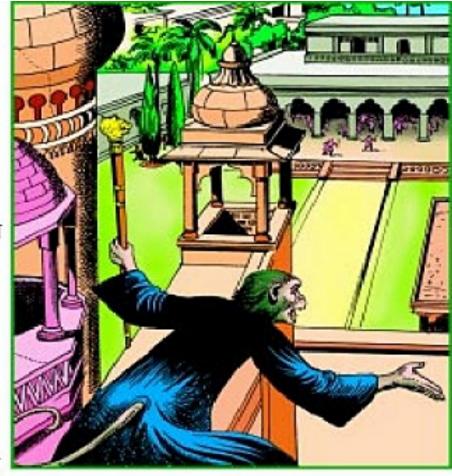
''अगर वह मांत्रिक जिंदा हो, तभी तो मेरा काम बनेगा।'' उग्रदण्ड ने उत्तर दिया।

इस बीच माया मर्कट दीवार पर से जोर से चिल्लाकर बोला, ''ओह! इस क़िले में लड़ाई हो रही है? या आँख मिचौनी? सब सैनिक दो भागों में बंट गये, कुछ लोग पुराने राजा दुर्मुख को जिताना चाहते हैं तो कुछ लोग सामंत राजा सूर्य भूपति को। ये कमबख्त कायर आमने-सामने खड़े हो युद्ध किये बिना खंभों की आड़ में ताक लगाकर एक दूसरे को उकसा रहे हैं।''

ये बातें सुन बधिक भल्लूक थोड़ा आश्वस्त होकर बोला - ''उग्रदण्ड! अब लगता है कि प्राणों के साथ राजा दुर्मुख के मेरे हाथों में पड़ने की संभावना है। इस भल्लूक की आकृति सेमुझे जल्द ही मुक्ति मिलनेवाली है।''

राक्षस उग्रदण्ड खीझ उठा, अपने पत्थरवाले गदे को जमीन पर दे मारा, तब बोला, "अबे बधिक भल्लूक! तुम अभी तक अपनापुराना राग आलापते हो। क्या भल्लूक मांत्रिक के प्राणों के साथ रहते उसके मंत्र दण्ड को कोई छीन सकता है?" फिर उसने तालियाँ बजाकर माया मर्कट को पुकारा, और पूछा, "अबे मर्कट! तुम भल्लूक मांत्रिक के मंत्र दण्ड को अपने साथ लाये हो, यह तो बड़ा ही अच्छा रहा। पर तुमने उसका शव कहाँ पर डाल दिया?"

"मैंने उसके शव को काटकर कौओं और चीलों का आहार बना डाला, मगर उन पक्षियों के शव के निकट आने से रोकते हुए कालीवर्मा उसका पहरा दे रहा है।" यों कहकर मर्कट ने मंत्र दण्ड को दीवार पर टिका दिया, फिर उस पर चढ़कर दूर तक नज़र दौड़ाकर कहा, "अरे, वह भल्लूक मांत्रिक किसी संजीवनी विद्या के सहारे फिर से ज़िंदा हो उठा है। वह एक भैंसे पर सवार है । बगल में एक घोड़े पर सवार हो कालीवर्मा और वह दोनों इधर ही आ रहे हैं। उनको बन्दी बनाने के लिए चन्द्रशिला नगर के राजा जितकेतु का मंत्री सेना के साथ उनका पीछा कर रहा है। उन दोनों का शिरच्छेद अपनी आँखों से देखकर ही मैं यहाँ से हिलूँगा, तब तक नहीं।"

माया मर्कट के मुँह से ये बातें सुन बधिक भल्लूक चिल्ला उठा - "हे सिरस भैरव!" फिर बोला, "अबे कमबख्त बंदर! तुम यह क्या बकते हो? तुम कहीं बावरे तो नहीं हो गये हो या हमें पागल बना देना चाहते हो?"

बधिक भल्लूक की बात पूरी भी न हो पाई थी कि तेजी के साथ आगे-आगे घोड़े पर कालीवर्मा तथा पीछे भैंसे पर भल्लूक मांत्रिक वहाँ पहुँचे। दुर्ग की दीवार पर खड़े माया मर्कट को देख बोले, "बधिक भल्लूक! मंत्र दण्ड को चुरानेवाले इस माया मर्कट को प्राणों के साथ छोड़ना नहीं चाहिए।"

दूसरे ही क्षण मर्कट किचकिच करते हँस पड़ा और छलांग मारकर क़िले के भीतर कूद पड़ा।

(और है)

बेताल कथाएँ

ज्योतिषी को ज्योतिष

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर, यथावत् वह श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''आधी रात को इस भयंकर श्मशान में घूम-फिर रहे हो। तुम्हारे साहस की कितनी ही प्रशंसा करूँ, कम है। मुझे लगता है कि किसी महान कार्य को साधने केलिए अपने प्राण की बाजी लगा रहे हो। साधारणतया हम देखते हैं कि कुछ लोगों में अपनी शक्ति से भी बढ़कर इच्छाएँ होती हैं और उन इच्छाओं को पूरा करने के लिए उनमें उतावलापन भरा रहता है। परंतु ऐसे लोग
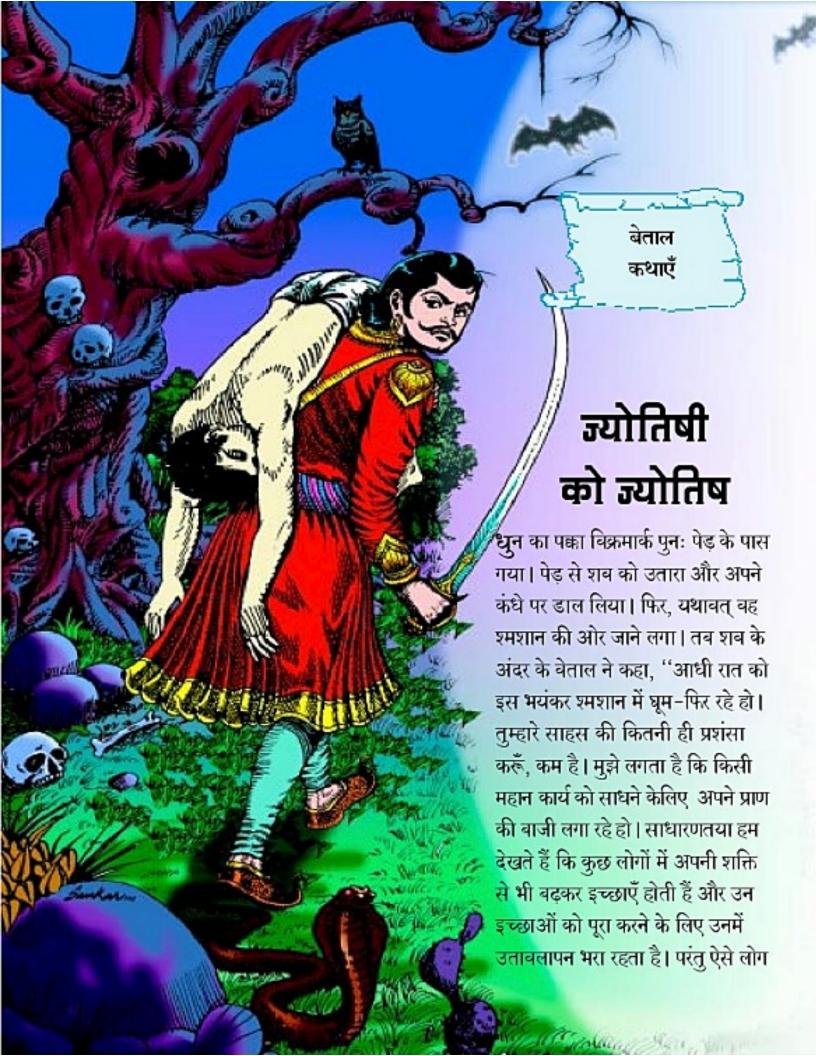
केवल शास्त्रों की दुहाई देकर अपने तर्क की पुष्टि कर लेते हैं। पर, सच कहा जाए तो उनमें तार्किक दृष्टि होती ही नहीं। इसलिए जीवन में उन्हें निराश होना पड़ता है। मुझे संदेह हो रहा है कि तुम भी ऐसे ही लोगों में से हो। तुम्हें सतर्क करने के लिए ज्योतिष शास्त्र के एक पंडित की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। ऐसे एक महान ज्योतिषी को भी पाठ सिखाया है, एक सामान्य युवक ने। और उसने यह किया, अनुभव से प्राप्त ज्ञान के आधार पर। थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी सुनो।'' फिर बेताल यों कहने लगा:

सीताफल नामक गाँव के निवासी सीताराम का बेटा है, भास्कर। वह देखने में बहुत सुंदर लगता है। उसका शरीर सुडौल है और स्वभाव से सुशील भी। उसी गांव के एक साधारण किसान महती की प्रबल इच्छा उसे अपना दामाद बनाने की है। परंतु भास्कर ने महती के प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहा, ''मैं फूटी कौड़ी भी कमा नहीं रहा हूँ। कहीं अगर कोई काम मिल जाए तो अवश्य तुम्हारी बेटी से शादी करूँगा।''

महती इतना संपन्न भी नहीं है कि वह उसकी जीविका का भार अपने ऊपर ले। फिर भी हर हालत में वह उसे अपना दामाद बनाना चाहता है। उसे लगा कि इस समस्या का समाधान गांव के ज्योतिषी मृत्युंजय ही कर सकेंगे। उसने उनसे सारी बातें बता कर पूछा, ''ज्योतिष के आधार पर आप क्या बता सकते हैं कि भास्कर कब से कमाने लगेगा?''

मृत्युंजय ने सीताराम के परिवार के और महती के परिवार के सदस्यों की जन्म-कुंडलियाँ मंगायीं और काफी छान-बीन के बाद कहा, ''तुम्हारी पुत्री संध्या से विवाह करने के बाद अगर वह मतंगपुर जाए, तो खूब कमाने लग जायेगा।''

भास्कर ज्योतिष में विश्वास नहीं रखता। पर उसके पिता सीताराम ने मृत्युंजय के ज्योतिष का पूरा बिश्वास किया। उसने अपने बेटे से संध्या से शादी करने की सिफारिश की।

''बिना कमाई के मैं शादी नहीं करूँगा।'' भास्कर ने साफ-साफ कह दिया।

''मेरी बात मानो। संध्या से शादी कर लो और उसे लेकर मतंगपुर जाओ। वहाँ अगर तुम्हारी जन्म-कुंडली सही नहीं निकली, उसमें लिखा गया

झूठ निकला, तो वापस आ जाना। तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का पालन-पोषण मैं करूँगा। अगर तुमने शादी करने से इनकार कर दिया तो मेरे साथ रहने की कोई ज़रूरत नही,'' सीताराम ने बेटे को सावधान करते हुए कह डाला।

पिता की आज्ञा को माननेके अलावा भास्कर के पास कोई और चारा नहीं था। उसने संध्या से शादी कर ली। उसे लेकर वह मतंगपुर पहुँचा। निवास-स्थल ढूँढ़ता हुआ वह एक गृहस्थी के पास गया और बोला, ''महोदय, मैं इस शहर में नया-नया आया हूँ। आपके घर में रहना चाहता हूँ। अगर मैं थोड़ा-बहुत कमा पाने में सफल हो जाऊँगा तो अवश्य आपका मांगा भाड़ा दे दूँगा।''

उस गृहस्थी ने उसे नख से शिख तक देखा और कहा, ''हमारा घर काफ़ी बड़ा है। तुम यहाँ रह सकते हो। परंतु तुम्हारे विवेक व सूझ की परीक्षा किये बिना रहने नहीं दूँगा। मैं अभी राम, सोम, नाग और किरण से मिलने जा रहा हूँ। इन सबसे मुझे रक़म मिलनी है। ये चारों बहुत दिनों से टालते आ रहे हैं। बहाना बनाकर मुझे बेवकूफ बना रहे हैं। तुम्हें बताना होगा कि किसके यहाँ जाने से मुझे मेरी रक़म मिलेगी।''

कुछ न कुछ तो बताना ही पड़ेगा, नहीं तो वह घर में रहने नहीं देगा, यों सोचकरभास्कर ने कहा, ''महोदय, आप नाग के घर जाइये। आज वह पूरी रक़म लौटा देगा।''

गृहस्थी, नाग के घर गया। नाग ने दोनों हाथ जोड़कर गृहस्थी से कहा, ''आप खुद आ गये! पूरी रक़म चुकाने मैं आप ही के घर के लिए निकल रहा था।''कहते हुए उसने पूरी रक़म दे दी।
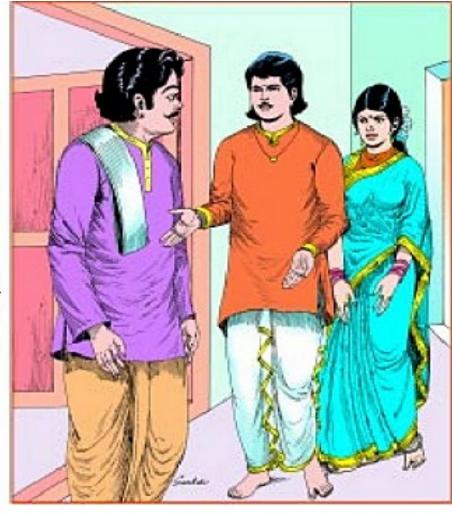
भास्कर को गृहस्थी के घर में आश्रय मिल गया। यह बात आग की तरह फैल गयी कि भास्कर महान ज्योतिषी है और उसकी बात खाली नहीं जाती। बस, फिर लोगों की भीड़ उसके पास आने लगी। भास्कर उनसे तरह-तरह के सवाल पूछता था और अपने लिए आवश्यक विषय बड़ी ही होशियारी से जान लेता था। उसके साथ वह लोकज्ञान जोड़ कर ज ो भी बताता था, सच निकलता था। इससे उसकी ख्याति फैल गयी।

अब मतंगपुर में भास्कर आराम से जिन्दगी काटने लगा। एक दिन संध्या ने, भास्कर से कहा, ''मुझे लगता है कि ज्योतिष का तुम्हारा ज्ञान

उनकी सम्मति व सलाह के बिना तुम किसी भी हालत में ज्योतिष नहीं छोड़ोगे।''

भास्कर पत्नी की बात टाल नहीं सका और मृत्युंजय से मिलने गांव जाने की तैयारी करने लगा। पर, इतने ही में मृत्युंजय उसके घर आ गये और कहने लगे, ''पुत्र, ज्योतिष में तुम जो फल बता रहे हो, किसी भी शास्त्र की गहराई में जाने के बाद भी यह संभव नहीं है।'' यों उन्होंने उसकी प्रशंसा के पुल बांध दिये।

''आर्य, मैं आप ही से मिलने निकल रहा था, आप स्वयं आ गये। क्या मैं जान सकता हूँ कि आपके यहाँ आने का कारण क्या है?'' भास्कर ने पूछा।

मृत्युंजय ने तुरंत कहा, ''मेरे गांव में लक्ष्मण नामक एक किसान है। उसका बेटा राजा के दरबार में काम पर लगा हुआ है। उसी के साथ राजधानी में ही रहने का उसने निश्चय कर लिया। इसलिए अपने पांच एकड़ों का खेत बेचने का उसने निर्णय ले लिया। असल में उस खेत के हर एकड़ की क़ीमत ज्यादा से ज्यादा सौ अशर्फ़ियाँ होंगी। पर हर एकड़ के लिए वह हज़ार अशर्फ़ियों की मांग कर रहा है। इसी कारण उसे खरीदने के लिए कोई भी आगे नहीं आ रहा है। आखिर लक्ष्मण, मुझ पर उस खेत को खरीदने के लिए ज़ोर डालने लगा।''

''यह तो सरासर नाइन्साफी है। भला वह खेत आप क्यों खरीदें?'' भास्कर ने कहा।

''यह तो बहुत बड़ी कहानी है। बहुत पहले

असाधारण है। हम यह शहर छोड़ देंगे और राजधानी जायेंगे। राजा की कृपा-दृष्टि हम पर पड़ जाए तो बस, देखते-देखते हम संपन्न हो जायेंगे।''

भास्कर ने उसकी बातों पर हँसते हुए कहा, ''मैं ज्योतिष नहीं जानता। ज्योतिष में मेरा विश्वास भी नहीं है। भाग्य साथ दे रहा है इसलिए मेरी वाणी सच निकल रही है। हाँ, हम राजधानी जायेंगे, पर व्यापार करके कमाने के लिए। भाग्य ने साथ दिया तो संपन्न भी होंगे।''

संध्या ने उसके इस विचार को अस्वीकार करते हुए कहा, ''हनुमान की तरह तुम अपनी शक्ति से परिचित नहीं हो। ज्योतिष के पंडित मृत्युंजय ने तुम्हारी शक्ति को पहचान लिया।

की बात है। लक्ष्मण के खेत में फसल नहीं होती थी, इसलिए वह ऋणी हो गया। उसमें साहस भरने के उद्देश्य से मैंने उससे कहा था कि तुम जल्दी ही कर्ज़ चुका दोगे और तुम्हारी स्थिति सुधर जायेगी। मैंने ही उससे कहा था कि उसके बेटे को राजा के दरबार में नौकरी मिल जायेगी। मैंने ही उससे यह भी बताया था कि उस खेत में उसे दस हज़ार अशर्फ़ियों का गुप्त धन मिलेगा। गुप्त धन के सिवा उसे सब कुछ मिल गया। खेत मुझे ही बेचकर प्रत्युपकार करने का उसका इरादा है। इन परिस्थितियों में मैं क्या करूँ, मेरी समझ में नहीं आ रहा है। तुम्हारी सलाह लेने तुम्हारे पास आया हूँ।'' मृत्युंजय ने अपने आने का कारण यों सविस्तार बताया।

''मैं इस बिषय में भला क्या सलाह दे सकता हूँ,'' भास्कर ने अपनी असहायता जतायी।

उस खेत में गुप्त धन के बिषय में मैंने जो भविष्यवाणी की थी, वह सच निकलेगी, इसका तुम दृढ़ीकरण करोगे तो मैं वह खेत खरीद लूँगा।'' मृत्युंजय ने कहा।

''महोदय, कमाई का जब कोई रास्ता नहीं था तब आपने ज्योतिष बिद्या के द्वारा जीने का रास्ता मुझे दिखाया। आप जो नहीं जानते, वह मैं कैसे जानूँ?'' आश्चर्य से भास्कर ने कहा।

''पुत्र, तुम्हारी वाणी अचूक है। मेरा ज्ञान है तो तुम्हारा भाग्य है। मैं तुम पर ही भरोसा रखता हूँ। अपना निर्णय सुनाओ।'' मृत्युंजय गिड़गिड़ाते हुए पूछने लगा।

वह उनकी बात टाल नहीं सका, इसलिए भास्कर ने सलाह दी कि वे उस खेत को खरीद लें। यह सलाह पाकर मृत्युंजय चले गये।

जो हुआ, सब कुछ देख रही थी, संध्या। उसने भास्कर से कहा, ''अब से ज्योतिष बताना छोड़ दो। राजधानी जाकर वहीं कोई व्यापार करना बेहतर होगा। व्यापार शुरू करके यथाशीघ्र दस हज़ार अशर्फ़ियाँ कमायेंगे और मृत्युजंय से वह खेत खरीद लेंगे। उसमें जो गुप्त धन है, वह हमारा हो जायेगा।''

भास्कर को इस बात पर खुशी हुई कि संध्या का ज्योतिष पर जो अंधविश्वास था, वह दूर हो गया और उसने उसे ज्योतिष छोड़नेकी अनुमति दे दी। वह पत्नी समेत राजधानी आया और

व्यापार करके बहुत ही कम समय में उसने दस हज़ार अशर्फ़ियाँ कमा लीं।

तब वे दोनों दस हज़ार अशर्फ़ियों को लेकर गांव आये। उसके पिता खुश होते हुए बोले, ''सही समय पर आये हो। आज मृत्युंजय के घर में बहुत बड़ी दावत का इंतज़ाम हो रहा है। उन्हें उनके खेत में दस हज़ार अशर्फ़ियों के मूल्य के सोने के सिक्के मिले हैं। इसके लिए सब के सब उनकी प्रशंसा कर रहे हैं। क्योंकि, ज्योतिष शास्त्र के द्वारा उन्होंने पहले से ही पता लगा लिया था कि वह धन-राशि उन्हें मिलनेवाली है।''

यह सुनकर भास्कर अवाक् रह गया। वह सोच में पड़ गया कि ज्योतिष फिर से शुरू करना है या व्यापार में ही लगे रहना है।

बेताल ने यह कहानी सुनायी और फिर विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, यह निर्विवाद सत्य है कि मृत्युंजय ज्योतिष शास्त्र में महान पंडित है, फिर भी खेत को खरीदने के विषय में भास्कर से सलाह मांगने क्यों गया। भास्कर तो ज्योतिष शास्त्र के बारे में कुछ भी जानता नहीं था। पर, उसकी भविष्यवाणियाँ कैसे सच निकलीं? मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''जीवन के अनुभवों से जो विवेकी पाठ सीखता है वह सदा जागरूक रहता है। किसी बड़े से बड़े वैद्य को ही लो, अगर उसके, परिवार के सदस्यों में से कोई बहुत बीमार पड़ जाए तो उसकी चिकित्सा शुरू करने के पहले, अपनी बराबरी के किसी अन्य वैद्य से सलाहें लेता है। उसी प्रकार अगर प्रख्यात ज्योतिषी को किसी गंभीर समस्या का सामना करना पड़े तो वह किसी और विख्यात ज्योतिषी से सलाहें लेता है। मृत्युंजय के विषय में भीयही हुआ। अब रही भास्कर की बात। मृत्युंजय ने यह कहते हुए उसकी सराहना की कि उसकी वाणी अमोघ है, अचूक है। उसकी हर विजय के पीछे भाग्य देवता उसके साथ है।'''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

आधारः 'वसुंधरा' की रचना
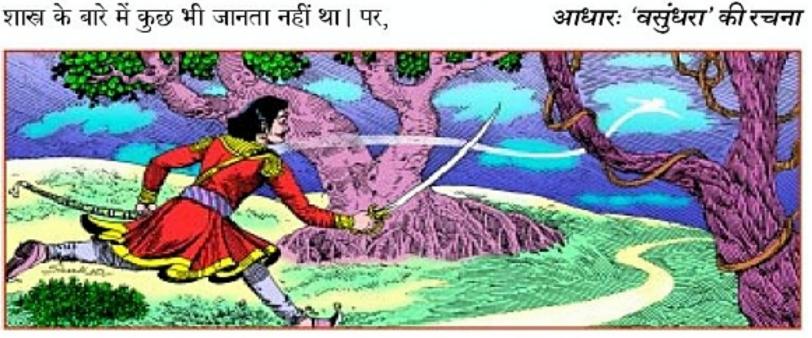
भित्ति चित्रों में महाभारत

महाराष्ट्र में अजन्ता और एलोरा के भित्ति चित्र विश्व प्रसिद्ध हैं। दक्षिण में वैसे ही चित्र सीतानवसाल, तंजौर तथा तीरुनन्दीक्करा में, सभी तमिलनाडु में, देखे गये।

दुर्भाग्यवश, तंजौर में बृहदीश्वर मन्दिर के भित्ति चित्रों को छोड़ कर अन्य दो स्थानों पर वे इतने क्षीण हो गये हैं कि उनका जीर्णोद्धार नहीं हो सकता। तंजौर मन्दिर की दूसरी मंजिल को, जहाँ की दीवारों को भित्ति चित्रों से सजाया गया है, सुरक्षा की दृष्टि से कुछदिनों के लिए बन्द कर दिया गया है।

भित्ति चित्र कला में रुचि उत्पन्न करने की दृष्टि से तंजौर में दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र ने अपनी दीवारों के २५० वर्ग फुट क्षेत्रफल में महाभारत की कथा को चित्रित करते हुए धारावाहिक भित्ति चित्र बनाने के लिए खुला आमन्त्रण दिया है। महाभारत की कथा को चित्रित करने के लिए २१ पट्टियाँ होंगी। पहली पट्टी में मुंशी के रूप में भगवान गणेश को महाभारत लिखवाते हुए व्यास मुनि का चित्रण होगा। अन्तिम पट्टी में १८ दिन के युद्ध में दुर्योधन का अन्त दिग्दर्शित रहेगा।
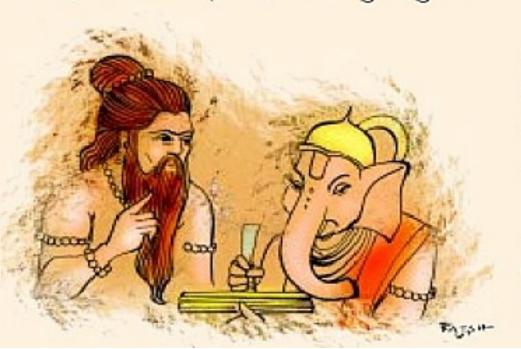
उसमें प्रयुक्त रंग पत्तियों, फूलों, फलों, बृक्ष के छालों तथा पत्थर के चूर्ण से बनाये गये हैं। यह कार्य केरल के एक परिवार द्वारा किया जा रहा है।

जबकि पिता बुनियादी रंग से दीवारों की रंगाई करता है, बेटा रेखांकन करेगा और माँ उन्हें रंगों से भरेगी।

पावरोटी में रत्न

एक राजा था जो यह जानने के लिए उत्सुक था कि लोग भाग्य खुल जाने पर उसका उपयोग कैसे करते हैं। एक दिन उसने शाही नानबाई को दो खूबसूरत पावरोटियाँ बनाने को कहा। उनमें से एक तो साधारण हो यद्यपि बड़ा और खोखला हो और दूसरी में रत्न भरा हो।

एक पुराना दरबारी सप्ताह में एक बार प्रातः काल खैरात बाँटा करता था। राजा ने उसे विश्वास में लेकर विशेष पावरोटी के बारे में कहा, "दोस्त, इसे एक ऐसे व्यक्ति को देना जो इसके योग्य हो। दूसरी पावरोटी किसी को भी दे सकते हो जो तुमसे भीख माँगने आये।"

प्रातःकाल उसके पास दो व्यक्ति आये। एक की लम्बी दाढ़ी थी और वह खास रंग का लम्बा चोगा पहने था, जिससे वह महात्मा जैसा लग रहा था। दूसरा व्यक्ति मामूली भिखारी था। दरबारी ने रत्नयुक्त पावरोटी दरवेश को दे दी और मामूली पावरोटी भिखारी को दी।

राजा ने अपने महल के छज्जे से यह देखा। उसने देखा कि महात्मा पावरोटी के वजन को एक हाथ से दूसरे हाथ में लेकर महसूस कर रहा है। उसने स्पष्ट रूप से यह निश्चय किया कि पावरोटी ठीक से सेंकी नहीं गई है।

"मेरे दोस्त, यह पावरोटी भारी लगती है। इसमें तुम्हारी पावरोटी से अधिक सामान लगता है। मैं उतना भूखा नहीं हूँ। हमलोग इन्हें क्यों न अदल-बदल कर लें?" उसने भिखारी से पूछा। भिखारी ने बिना एक शब्द बोले अपनी रोटी उससे बदल ली। राजा ने अपने आप से कहा, "भगवान अपने अनन्त ज्ञान में नहीं चाहते कि महात्मा रत्नों के मोह का शिकार हो। वे नहीं चाहते कि वह अमीर बन जाये।"

राजा इस घटनाक्रम की अपनी व्याख्या से सन्तुष्ट था। लेकिन उसने महात्मा के चेहरे पर एक धूर्त-हँसी भी देखी। बेशक महात्मा ने यह सोचा होगा कि उसने उसे आधी सेंकी पावरोटी देकर मूर्ख बनाया है।

इससे राजा की उत्कंठा और बढ़ गई। उसने
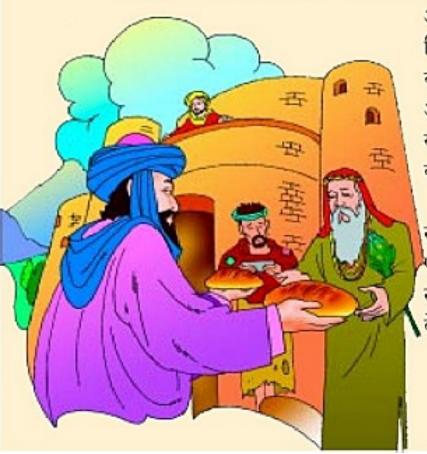
तुरन्त अपने दो गुप्तचर अधिकारियों को कहा कि वे उन दोनों का पीछा करें और बतायें कि उन दोनों ने पावरोटियों का उपयोग कैसे किया। उसे शाम को खबर मिल गई। तथाकथित महात्मा ने अपनी झोंपड़ी में जाकर अपनी दाढ़ी और चोगा उतारा तथा अन्य एकत्रित भोज्य सामग्री के साथ पावरोटी भी खा ली। फिर उसने दाढ़ी और महात्मा का चोगा पहन लिया और बाजार में भीख माँगने निकल पड़ा।

भिखारी ने अपनी झोंपड़ी में पहुँच कर पावरोटी को काटा और उसमें रत्न देख कर हैरान रह गया। उसकी पत्नी खुशी से उछल पड़ी और उसने अपने लिए एककण्ठा बनाना चाहा। लेकिन भिखारी ने कहा, ''दरबारी व्यक्ति के द्वारा भगवान ने इसे एक महात्मा को दिया और महात्मा ने मुझे दे दिया। यह मेरे जमीर का इम्तहान है। पहले मुझे दरबारी महोदय के पास जल्दी जाकर यह पता करना चाहिये कि ये रत्न कहीं अनजाने में तो पावरोटी के अन्दर नहीं रह गये। चोर ने दरबारी के घर से चोरी करके रत्नों को पावरोटी में छिपा दिया होगा। वह शायद इसे सुरक्षित घर ले जाना चाहता होगा किन्तु अवसर नहीं मिला होगा। किन्तु यदि दरबारी को इसकी जानकारी थी और उसने जान बूझ कर महात्मा को उसके हित के लिए दिया था, तब इसे महात्मा के पास ही लौटा देना ठीक होगा। अन्यथा, हम इसे कुछ अपने लिए और कुछ जरूरतमन्द पड़ोसियों के लिए उपयोग में ला सकते हैं।''

और शीघ्र ही भिखारी रत्नों को लेकर दरबारी से मिलने चला गया। उसे राजा ने बुला कर न केवल उन रत्नों को अपने पास रखने के लिए कहा, बल्कि उसकी आदर्श ईमानदारी के लिए उसे पुरस्कृत भी किया। ''विधाता ने इसे उस धोखेबाज से झपट लिया जो महात्मा बनने का ढोंग करता था। लेकिन मुझे जो शिक्षा मिली है, वह बहुमूल्य है। यदि पावरोटी के अदल-बदल के विषय में मैं अपनी व्याख्या से सन्तुष्ट रहता, तब मैं सत्य जानने से वंचित रह जाता। दूसरे शब्दों में, इस बात से सन्तुष्ट हो बैठ जाना कि मैं सत्य को जानता हूँ, दम्भ है।'' प्रज्ञावान राजा ने उस राज पुरुष तथा अन्य दरबारियों से कहा।
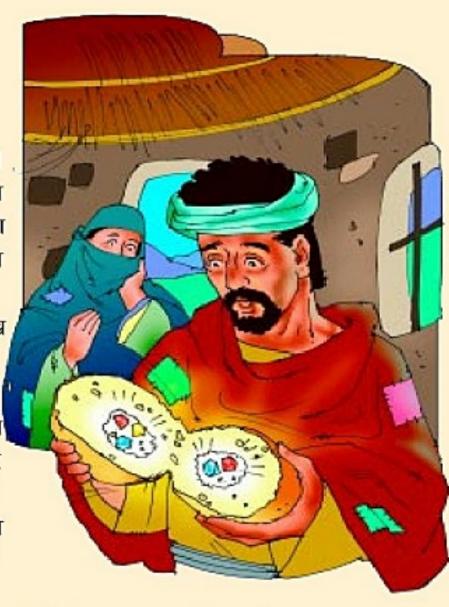
(एम.डी.)

मूक जीव की गवाही

सुधाम नामक गांव में भीम नामक एक किसा न रहता था। बह अप ने चार एकड़ के खेत में कुम्हड़े उपजाता था और पास ही के कोलार शहर के दुकानदारों को बेचा करता था। एक बार खेत की रखबाली करनेबाले कल्लू से उसने कहा, ''मुझे अपने रिश्तेदार को देखने आज ही जाना है। मेरे लौटने में हो सकता है, एक महीना लग जाए। खेत की देखभाल करने में लापरवाही मत बरतना।''

कल्लू चार-पांच दिनों में एक बार, अपने बेटे की बैल गाडी में दस-बारह कुम्हडे लादकर कोलार शहर के दुकानदारों को बेचने लगा।

एक महीने के बाद भीम लौट आया। उसने जाने के पहले गिनती कर ली थी कि किस-किस आलबाल में कितने कच्चे फल हैं। उनमें से कई अब नहीं रहे। उसे लगा कि कल्लू ने ही यह चोरी की। उसने उसकी चोरी पकड़ने के लिए एक उपाय निकाला।

दूसरे दिन भीम ने, उससे कहा, ''देखो कल्लू, अपने बेटे की बैल-गाड़ी सबेरे-सबेरे ले आना। शहर ले जाकर कुम्हडे बेचने हैं।'' दूसरे दिन कल्लू खुद बैल-गाडी ले आया। पच्चीस कुम्हडों को गाड़ी में डलवा कर कल्लू से भीम ने कहा, ''मेरी तबीयत ठीक नहीं है। सड़क भी खराब है, इसलिए बैल को धीरे-धीरे जाने देना।'' कल्लू ने ऐसा ही किया। बैल सीधे शहर की दुकान के सामने रुक गया। दुकानदार ने कुम्हडों को देखकर कल्लू से कहा, ''कभी भी दस-बारह कुम्हडों से ज्यादा लेकर आते नहीं थे, आज इतने कुम्हड़े कैसे ले आये?''

अब कल्लू की चोरी पकडी गयी। भीम ने उससे कहा, ''बैल को जहाँ पहुँचने की आदत होती है, वहाँ अपने आप ही पहुँच जाता है। इस मूक जीव ने यह गवाही दे दी कि तुम चोर हो। मैं तुम्हें काम से निकाल देता हूँ।''

- कोलार कृष्णा

भगवान का अस्तित्व

नामदेव के गुरुकुल में जितने विद्यार्थी विद्याभ्यास कर रहे थे, उनमें से चैतन्य दूसरों से अधिक बुद्धिमान था। वह हर विषय की गहराई में जाता था और ज्ञान प्राप्त करता था। नामदेव उसकी कुशाग्र बुद्धि से बहुत संतुष्ट थे। उन्होंने अपना संपूर्ण पांडित्य अपने प्रिय शिष्य को सौंप दिया।

अब चैतन्य अठारह साल की उम्र का हो गया। नामदेव को लगा कि गुरुकुल में अब उसके रहने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि सभी विद्याएँ उसने सीख लीं। इस निर्णय पर आकर उन्होंने चैतन्य से कहा, "पुत्र, तुम्हारी पढ़ाई समाप्त हो गयी। साथ ही तुममें अच्छे संस्कार और विनय संपदा भी हैं। अब घर लौटो और अपने माता-पिता की सेवा में लग जाओ। भगवान सदा तेरा साथ देंगे।"

चैतन्य ने गुरु को सिर झुकाकर प्रणाम किया और कहा, "गुरुवर, आपने मुझे कितनी ही विद्याएँ सिखायीं। पर अब अपने जिस भगवान का नाम लिया, उसे आपने नहीं दिखाया। जो भगवान कहीं नहीं दिखायी देते, भला वे मेरा साथ कैसे देंगे?"

चैतन्य हेतुवादी था। जो प्रत्यक्ष दिखायी देता है, उसी को सच माननेवाला यथार्थवादी था।

नामदेव ने क्षण भर सोचकर कहा, "चैतन्य, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर अभी नहीं, बाद में दूँगा। पहले एक काम करो। उत्तरी दिशा में जो अरण्य है, उसे पार करोगे तो वहाँ सुशांत नामक एक नगर है। वहाँ से एक कोस की दूरी पर भवानीपुर नामक एक गाँव है। उस गाँव में मेरा भाई रहता है। क्या वहाँ जाकर उसके कुशल मंगल का समाचार जानकर आ सकोगे?"

चैतन्य ने अपनी सहमति दे दी और दूसरे ही दिन प्रातःकाल निकल पड़ा। गुरु पत्नी ने उसके लिए दो दिनों के लिए आवश्यक आहार-पदार्थ एक थैली में रखकर दिये।

आशा लता
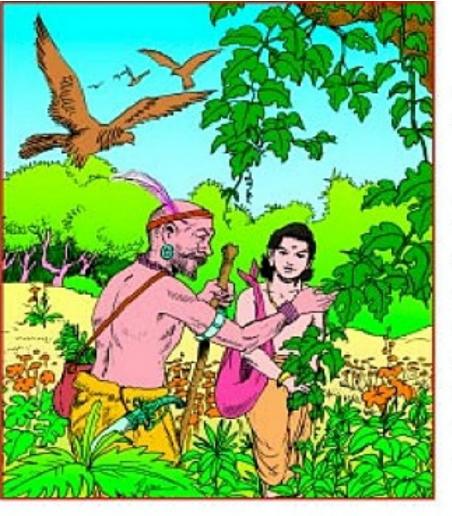
चैतन्य तेज़ी से बढ़ता हुआ, दुपहर तक अरण्य के बीच पहुँच गया। इसे प्यास लगने लगी तो वह पानी ढूँढने लगा। तब इस प्रक्रिया में उसने एक अंधे वृद्ध को देखा जो जंगली पेडों के पत्तों पर हाथ फेरते हुए उनकी गंध सूंघ रहा था और उन्हें तोडता हुआ जा रहा था।

चैतन्य ने वृद्ध के पास आकर उससे पूछा, ''दादा, क्या ढूँढ़ रहे हो?'' ''बेटे, ढूँढने के लिए मैंने कुछ भी खोया नहीं। मैं पास ही के बनजन की बस्ती का हूँ। सब लोग मुझे औषधियों का दादा कहकर पुकारते हैं। जो पत्ते औषधियों के लिए उपयोग में आते हैं, उन्हें पहले छूता हूँ, फिर सूँघकर उन्हें तोड लेता हूँ। जन्म से ही मैं अंधा हूँ न!'' वृद्ध ने कहा।

''अब तुम्हारे हाथ में जो लता है, उसका उपयोग किस रोग की चिकित्सा के लिए होता है?'' चैतन्य ने पूछा।

''यह विषमार है। सांप की काट के लिए यह अचूक औषधि है। जिस आदमी को सांप डंसता है, इस लता को निचोडकर उसके मुँह में इसका रस डाल दिया जाए तो क्षण भर में विष अपना प्रभाव खो देता है और उस आदमी की जान बच जाती है। चाहो तो इसे अपने पास रख लो। जंगल में घूम रहे हो, शायद तुम्हें इसकी ज़रूरत पड़ सकती है।'' चैतन्य ने उस लता को अपने कपड़ों में छिपा लिया और दादा से पूछा, ''इधर कहीं पीने को पानी मिलेगा?''

''पास ही एक बावडी है। ढूँढ़ने पर दिखायी देगी'', दादा ने कहा।

चैतन्य थोड़ी दूर गया और चारों ओर ध्यान से देखने लगा। उसे एक बरगद के पेड़ के बग़ल में एक बावडी दिखायी पड़ी। उसने वहीं भोजन भी किया और वृक्ष की नीचे विश्राम करने लगा। उसे अचानक लगा कि कोई चीज़ उसपर आ गिरी तो उसने आँखें खोलीं। उसने देखा कि एक खरगोश भाग रहा है। इतने में वृक्ष की एक शाखा टूटकर धड़ाम से ज़मीन पर गिरी। चैतन्य बाल-बाल बच गया। अगर खरगोश न आता, और उसकी आँखें नहीं खुलतीं तो सोते समय अवश्य ही वृक्ष की शाखा उसी पर गिरती और पता नहीं, उसपर क्या गुज़रता।

चैतन्य उठ बैठा और फिर से निकल पड़ा। अरण्य पार करके नगर की सरहदों पर जब वह

पहुँचा तब उसने वहाँ एक ग़रीब आदमी, उसकि पत्नी व उनके बच्चों को देखा, जो भूख के मारे तड़प रहे थे। वे बेचारे भीख मांग रहे थे।

चैतन्य ने तुरंत बचे-खुचे आहार पदार्थ उन्हें दे दिया और वहाँ से निकल पड़ा। नगर पहुँचते - पहुँचते रात हो गयी। रात को एक सराय में ठहरा। जब वह सो रहा था, तब आधी रात को उसे कोलाहल सुनायी पड़ा जिससे वह जाग गया। उसने देखा कि सराय के बरामदे में एक मुसाफ़िर के मुँह से फेन निकल रहा है और वह छटपटा रहा है। तभी उसे एक काला सांप भी दिखायी पड़ा, जो तेज़ी से बढ़ता हुआ जा रहा था।

चैतन्य को यह समझने में देर नहीं लगी कि उस काले सांप ने ही मुसाफिर को डंसा। उसने तुरंत अपने कपड़ों से लता निकाली; उसे निचोडा और उसका रस मुसाफ़िर के मुँह में डाल दिया। देखते-देखते उसका बदन नीले रंग से सहज रंग में परिवर्तित होने लगा। जिस मुसाफ़िर ने धीरे-धीरे आंखें खोलीं, वह कोई और नहीं बल्कि सुशांत नगर का स्वयं महामंत्री था। जनता की स्थिति जानने के लिए बहुरूपिया बनकर नगर में घूम रहा था, तभी यह घटना घटी।

महामंत्री ने चैतन्य की भरपूर प्रशंसा की। कहा, ''तुमने मेरी जान बचायी। कुछ भी करूँ, तुम्हारा ऋण चुका नहीं पाऊँगा। फिर भी राजा के आस्थान में तुम्हें अच्छी नौकरी दिलवाऊँगा। क्या तुम्हें मंजूर है?''

चैतन्य ने, महामंत्री को अपनी कृतज्ञता जतायी और कहा, ''एक अत्यावश्यक काम पर भवानीपुर जा रहा हूँ। लौटकर आपके दर्शन
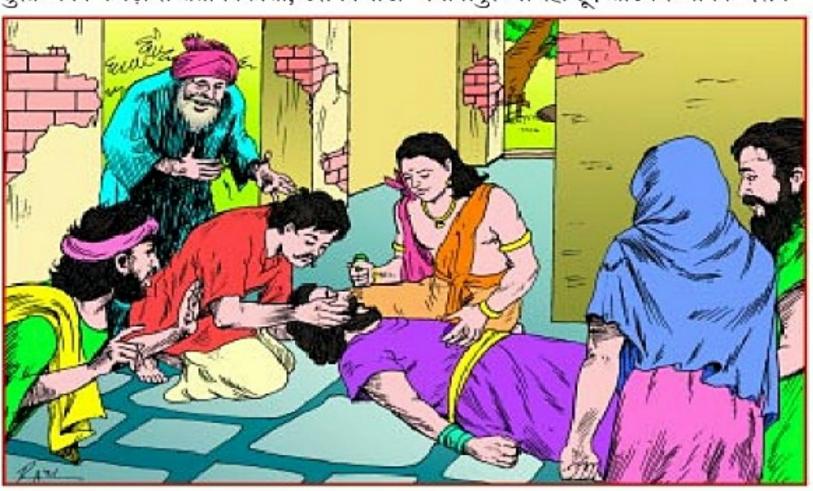
करूँगा।'' सबेरे ही वह सुशांत नगर से निकल पड़ा और भवानीपुर पहुँचकर गुरुवर के भाई के कुशल-मंगल जानने के बाद लौट पड़ा।

सूर्यास्त समय तक वह गुरुकुल पहुँच गया और गुरु को सारा का सारा बृत्तांत खुलासा बताया।

गुरु बहुत खुश हुए। कहा, ''पुत्र चैतन्य, तुमने मुझसे भगवान के अस्तित्व के विषय में प्रश्न पूछा था न? परन्तु मेरे हस्तक्षेप के बिना ही तुमने स्वयं भगवान के दर्शन कर लिये।''

''मैंने दर्शन किये? नहीं तो, मुझे तो भगवान दिखायी नहीं पड़े।'' चैतन्य ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

इसपर हँसते हुए नामदेव ने कहा, ''यहाँ, वहाँ, अब, तब, हर जगह भगवान दिखायी देते हैं, परंतु हाँ, वे किसी एक ही रूप में सीमित नहीं रहते। बस, उस सर्वव्यापी का स्मरण करने की विज्ञता चाहिये।''

गुरु की बातें चैतन्य की समझ में नहीं आयीं। वह गुरु की तरफ़ निश्चेष्ट होकर देखता रहा। तब नामदेव ने कहा, ''सुनो, जिस अंधे वृद्ध वनजन ने तुम्हें विषमार की लता के बारे में बताया, वह भगवान है। अरण्य में भी शायद बावडी की ज़रूरत पड़े इसलिए जिस व्यक्ति ने बावडी खुदवायी, वह भी भगवान है। जिसनेतुम्हारी जान बचायी, वह खरगोश भी देवांश है। सांप के डंसने से जो महामंत्री छटपटा रहा था, जिसकी मौत होनेवाली थी, उसे तुमने बचा लिया। तुम्हें भी इसकी जानकारी नहीं है कि तुममें भगवान है। इतने रूपों में जो भगवान प्रत्यक्ष हुए हैं, उन्हें देखने के बाद भी उनके अस्तित्व को लेकर तुम प्रश्न कर रहे हो?''

गुरु की बातों से उसमें ज्ञानोदय हो गया। वह जान गया कि जिस हृदय में दया, करुणा, सहानुभूति होता है, उनके हृदयों में भगवान बसते हैं। उसने गुरु के पैरों पर गिरकर साष्टांग नमस्कार किया और उनसे जाने की अनुमति ली।

इसके बाद चैतन्य अपने माँ-बाप को लेकर सुशांत नगर गया, महामंत्री से मिला और उनकी सहायता से आस्थान में अच्छी नौकरी पायी।

विश्व नेताओं में गाँधीजी

ब्रिटिश रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा संचालित एक मतदान के अनुसार पिछले ६० वर्षों के दौरान महात्मा गाँधी और मदर टेरेसा को विश्व-नेताओं में स्थान दिया गया है। इस मतदान में लगभग २००० नागरिकों ने भाग लिया, जिन्होंने दक्षिण अफ्रिकी नेता नेल्सन मंडेला को प्रथम स्थान दिया।

दिवंगत राजकुमारी डायना को दूसरा स्थान मिला और गायक बॉबगेल डॉफ को तीसरा। गाँधी जी और मदर टेरेसा को क्रमशः चौथा और पाँचवा स्थान दिया गया।

यह कोई 'हल्का' पठन नहीं है !

भूटान पर एक सम्पूर्ण ग्रंथ, जिसका वजन १३० पौण्ड है और जो डायनिंग टेबुल के आकार का है, अमरीका के सिएक्स नगर में दस हजार अमरीकी डॉलर में बेचा गया। गिनिज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रेकाईस ने प्रमाणित किया है कि यह विश्व भर में सबसे बड़ी पुस्तक है। इसके विक्रय से प्राप्त आमदनी का उपयोग भूटान में शैक्षणिक कार्यक्रमों पर किया जायेगा। ''अ विजुअल ओडिसी अक्रॉस द लास्ट हिमालयन किंग्डम'' नामक इस ग्रंथ में कुछ दुर्लभ चित्र हैं।

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता
सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ो:

अर्जुन सिंह के महल में शंकर शाही बावर्ची था।
एक दिन रानी ने उसे बुलवाया। ''मेरा भाई यहाँ है और वे राजा के साथ भोजन करेंगे।''

''मैं केवल राजा के लिए रसोई बनाऊँगा,'' शंकर ने कहा।
रानी ने तुरन्त राजा से शिकायत की। ''महाराज, यह सच है कि मैंने महारानी से कहा कि मैं केवल आप के लिए रसोई बनाऊँगा,'' शंकर ने कहा।

''ठीक है,'' राजा ने कहा, यदि मैं चाँदी के सौ सिक्के अतिरिक्त मजदूरी दूँ तब क्या मेरे साले के लिए रसोई बना दोगे?''
अब कल्पना करो कि शाही बावर्ची ने क्या उत्तर दिया होगा। निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखो:

- क्या बावर्ची अतिरिक्त मजदूरी के लालच में आ जायेगा?
- क्या बावर्ची अपनी बात पर अड़ा रहेगा?
- क्या शंकर को अन्य लोगों के लिए भी रसोई बनाने को कहा जायेगा?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में दो। साथ में एक उपयुक्त शीर्षक भी दो। अपनी प्रविष्टि निम्नलिखित कूपन के साथ एक लिफाफे में भेजो जिस पर अंकित हो- ''पढ़ो और प्रतिक्रिया दो।''

अन्तिम तिथि: ३१ अक्तूबर २००४

नाम ---उम्र-----------जन्मतिथि-----------------------

विद्यालय ---कक्षा-----------

घर का पता---

--पिनकोड---------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

दयालु

फुलवारी नामक गांव में पुरुषोत्तम नामक एक व्यापारी था। मुरारी उसका बेटा था। बचपन से ही उसमें दया कूटकूटकर भरी हुई थी। अब वह सत्रह साल का हो गया।

एक दिन गली में मुरारी खेलने गया, पर तन पर बिना कमीज़ के घर लौटा। बात यों हुई। खेलते समय उसके दोस्त की कमीज़ फट गयी। बेचारा वह बहुत ग़रीब था। वह यह कहते हुए रोने लगा कि यही मेरी एकमात्र कमीज़ है, बिना कमीज़ के कल से कैसे बाहर आऊँगा। मुरारी ने चुपचाप अपनी कमीज़ उसे दे दी।

यह जानकर मुरारी के पिता पुरुषोत्तम ने उसे खूब फटकारा और कहा कि व्यापार में दया के लिए कोई स्थान नहीं है। उसने उसे सावधान करते हुए कह दिया कि आगे से इस विषय में वह सावधान रहे। तब पुरुषोत्तम की पत्नी ने पति को रोकते हुए कहा, ''उसे फटकारने से क्या फ़ायदा है? अगर इस में इसी प्रकार करुणा आवश्यकता से अधिक रही तो यह व्यापार में सफल नहीं होगा। इसलिए इसे किसी अच्छे गुरु से शिक्षा दिलवायी जाए।''

पुरुषोत्तम को पत्नी की सलाह अच्छी लगी। वह मुरारी को लेकर पंडित सुशर्मा के घर गया। उसने मुरारी के बारे में सब कुछ विशद रूप से बता चुकने के बाद सुशर्मा से कहा, ''जिस प्रकार से पंचतंत्र में विष्णुशर्मा ने राजकुमारों को ज्ञानी व विवेकशील बनाया, उसी प्रकार मेरे पुत्र मुरारी को ज्ञानी व विवेकशील बनाइये। आप ही यह कार्य कर सकते हैं। इसे नौकरी करने की कोई ज़रूरत नहीं है। व्यापारी का योग्य बेटा साबित हो, यही बहुत है। यह जान जाए कि व्यापारियों में दया गुण का होना सर्वथा अनुचित है।''

सुशर्मा ने मुस्कुराते हुए कहा, ''पुरुषोत्तमजी, मानव में जो सदगुण होने चाहिये, उनमें से दया

मार्कण्डेय

प्रधान गुण है। दूसरे मानव के प्रति जो दया नहीं दिखाता, वह मानव नहीं कहला सकता। उसका दिल तो पत्थर जैसा कठोर है। परंतु हाँ, मानता हूँ कि इस दया में मासूमियत न हो, समझदारी अवश्य हो।'' कहते हुए सुशर्मा ने मुरारी को अपना शिष्य बना लिया।

एक दिन सबेरे सुशर्मा ने मुरारी से कहा, ''बेटे, तुम बड़ी ही श्रद्धा के साथ शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। तुम्हारा यह गुण मुझे बहुत अच्छा लगा। तुम बड़े ही कोमल स्वभाव के हो। इसी कारण तुममें, करुणा भरी हुई है। पर दया दिखाने के पहले ध्यान देना होगा कि वह दया का पात्र है या नहीं। इस सत्य को जान जाओगे तो दूसरों की सहायता करने का तुममें जो सहज गुण है, वह व्यापार में प्रयोजनकारी साबित होगा।''

मुरारी ने तुरंत पूछा, ''गुरुजी, मेरी समझ में नहीं आता कि मेरे वृत्तिधर्म व्यापार और दया गुण में क्या संबंध है?''

''बहुत ही जल्दी यह तुम्हारी समझ में आ जायेगा। पर अभी तुम्हें एक काम करना होगा। आजकल वैद्य वरदाचारी हमें दवाएँ दे रहे हैं। तुम उनके घर जाओ और वे दवाएँ ले आओ। उनसे कहना कि मैंने तुम्हें उनके पास भेजा है।''

मुरारी, वरदाचारी के घर गया और आने का कारण बताया। तब वैद्य ने कहा, ''दवाएँ बनाने में एक घंटे का समय लग जायेगा। रोगियों को भेजने के बाद ही तुम्हारा काम कर पाऊँगा।''

दवा लेने आये हर रोगी से आचारी कहने लगे, ''एक लंगड़ा है, जो मेरे लिए जड़ी-बूटियाँ ले आता है। उसका बाप दिल की बीमारी से पीड़ित है। इसके लिए सोने व पारे को मिश्रित करके पकाना होगा और उनकी गोलियाँ बनानी होंगी। इसके लिए बहुत खर्च होगा। मुझसे जितना हो सकता है, मैं दूँगा। आप लोग भी उसपर दया करके अपनी तरफ़ से जितना हो सकता है, दीजिये। वह अभी बाहर खड़ा है।''

यह सुनते ही मुरारी का मन करुणा से भर गया। उसने बाहर आकर देखा। घर के चबूतरे के बगल में एक आदमी लाठी के सहारे खड़ा था।

मुरारी, आचारी के पास आया और बोला, ''हमारे गुरुजी का कहना है कि दया गुण का होना अच्छा नहीं है। पर मुझे लगता है कि उनकी बातें सच नहीं हैं। उस लंगड़े पर दया करके बहुत

लोग उसे धन-दान दे रहे हैं। मैं भी उसके लिए यह अंगूठी आपको दे रहा हूँ।''

मुरारी की बातों पर ठठाकर हँसते हुए वरदाचारी गली में झांकते हुए ''वीर'' कहकर चिल्लाया।

लाठी के सहारे खड़े उस लंगड़े ने लाठी चबूतरे पर फेंक दी और तेज़ी से चलते हुए अंदर आया। यह दृश्य देखकर मुरारी आश्चर्य में डूब गया। तब आचारी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, ''मैंने ही यह इंतज़ाम किया। अब शायद तुम समझ गये कि दया गुण का सहारा लेकर, उसकी आड़ में कैसे धन कमाया जा सकता है।

तुम्हें यह अंगूठी प्रेमपूर्वक दी है, तुम्हारे पिता ने। अपने दयालु स्वभाव के कारण इसे एक धोखेबाज़ को देने पर तुल गये हो न?''

मुरारी ने ''हाँ'' के भाव में सिर हिलाया। तब आचारी ने उससे कहा, ''मेरी वृत्तिका धर्म है, रोगी के उपयोग में आना। पर कभी-कभी मुझे झूठ बोलना पड़ता है। अपने गुरुजी की माताजी की ही बात लो। बुढ़ापे में बीमार पड़ना स्वाभाविक है। साधारण शारीरिक लक्षणों को भी वह रोग मान बैठी हैं। वह मानती नहीं हैं कि यह रोग नहीं है। इसलिए शक्तिवर्धक गोलियाँ उन्हें यह कहकर भेजा करता हूँ कि ये गोलियाँ अचूक हैं और आपकी बीमारी को हमेशा के लिए ख़त्म कर देंगी। तब जाकर वे तृप्त होती हैं। तुम्हें जो गोलियाँ देने जा रहा हूँ, वे भी इसी श्रेणी की हैं।'' फिर एक पुड़िया उसके हाथ में थमाते हुए आचारी ने कहा, ''भविष्य में जो व्यापार करने जा रहे हो, उसे श्रद्धा के साथ करो। प्रयोज्य दया गुण से काम लो। इस अपाहिज का नाटक तुम्हारे गुरुजी के कहे अनुसार ही आयोजित हुआ है।''

मुरारी दवा की गोलियाँ को लेकर गुरु के घर आया और बोला, ''गुरुजी, अभी-अभी मैंने जान लिया कि हममें दया का जो गुण है, उसका उपयोग बिना सोचे-विचारे करना नहीं चाहिये। और दया सुपात्र के प्रति ही दर्शायी जानी चाहिये।''

मुरारी में हुए परिवर्तन से सुशर्मा बेहद संतुष्ट हुए। अपने आप सोचा, मेरे प्रयास सफल हुए। व्यापारी पुरुषोत्तम सचमुच ही भाग्यवान है।
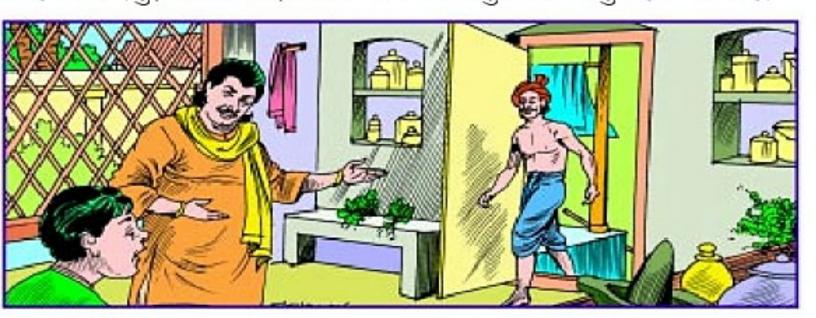
शनिवार के सदमे और आश्चर्य

एक गरीब किसान के तीन बेटे थे। उसने बड़ी सावधानी से उनका लालन-पालन किया। बहुत प्यार से रखने के कारण बेटों का उससे बहुत लगाव हो गया। वे अपने खेतों पर पिता की मदद करते थे। कुछ वर्ष बीत जाने पर किसान उनके लिए उपयुक्त दुल्हनें ले आया। यह निश्चय किया गया कि हर रोज एक बहू घर पर रुक कर घर का काम-काज करेगी और सब के लिए खाना पकायेगी।

एक शनिवार के दिन सबसे छोटी बहू की

बारी थी। उसने अभी भोजन पकाना शुरू ही किया था कि उसे किसी की आवाज सुनाई पड़ी। वह बाहर आई। दरवाजे पर चिथड़ों में एक भिखारी खड़ा था। ''मेरे सारे शरीर में खुजली हो रही है। क्या आप कृपया कुछ तेल देंगी जिससे मैं तैल-स्नान कर सकूँ!'' उसने अनुरोध किया।

स्त्री अन्दर गई और एक बोतल लाकर उसमें से उसकी तलहथी पर उसने कुछ तेल डाल दिया। उसने अपने सारे शरीर प र तेल मालिश कर लिया। ''वहाँ एक तालाब है।'' स्त्री ने कहा, ''स्नान के बाद वापस आ जाना। मैं तुम्हें कुछ खाने के लिए दूँगी।''

भिखारी स्नान करने चला गया। वापस आते समय उसने कुछ चौड़े पत्ते तोड़े और उनसे एक दोना बनाया। स्त्री ने उसे पत्ते के दोने पर खाना परोस दिया। ''मैंने ऐसा स्वादिष्ट भोजन बहुत दिनों पर खाया है,'' उसने कहा। लौटते समय उसने पत्तों के दोने को फेंका नहीं बल्कि छप्पर में खोंस दिया। स्त्री ने इसे देखा किन्तु शीघ्र ही सब कुछ भूल गई।

संध्या समय जब परिवार के सभी लोग एक साथ खाने के लिए बैठे तब भोजन उन्हें अत्यन्त स्वादिष्ट लगा और सबने सबसे छोटी बहू की

तारीफ की। किसी तरह उसे भिखारी के विषय में बताने का अवसर नहीं मिला।

दूसरा शनिवार आ गया जब दूसरी बहू की बारी थी। वह भोजन बनाने की तैयारी कर रही थी, तभी उसे किसी की पुकार सुनाई पड़ी। वह भिखारी था। जब बहू बाहर आई, उसने कहा, ''बेटी, थोड़ा तेल दे दो। मेरे शरीर पर ददोरा हो गया है, मैं तैल-स्नान करना चाहता हूँ।''

बहू ने उसके शरीर पर कई ददोरे देखे। उसे वे बहुत घृणित लगे। उसने क्रोधित होकर कहा, ''भिखारियों के वास्ते मेरे पास तेल नहीं है। चल जा यहाँ से!'' वह पाँव पटकती घर के अन्दर चली गई। उसने भिखारी की आवाज फिर सुनी।

''ठीक है, मैं चला जाता हूँ,'' उसने कहा, ''लेकिन कम से कम क्या एक रोटी दे सकती हो? सुबह से कुछ खाने को नहीं मिला!''

इस बार स्त्री बाहरनहीं आई। ''ओह! तुम अभी भी चिपके हुए हो?'' एक बर्तन में गन्दा पानी था। स्त्री ने खिड़की से वह पानी भिखारी पर डाल दिया।

''तो तुम एक गरीब भिखारी के साथ ऐसा ही बर्ताव करती हो! आज तुम्हें भोजन नहीं मिलेगा!'' यह शाप देकर वह चला गया।

स्त्री अब भोजन पकाने में व्यस्त हो गई। हर रोज की तरह शाम को सब खाने के लिए बैठ गये। दूसरी बहू को यह देख कर धक्का लगा कि बर्तन खाली थे। न सिर्फ वे खाली थे, बल्कि ऐसा लगता था जैसे खाना खाकर उसे साफ कर दिया गया हो। उसे याद था कि उसने बर्तनों को ठीक से ढक दिया था।

किसान, जो सभी बहुओं को प्यार करता था, नहीं चाहता था कि टीका-टिप्पणी कर वह दूसरी बहू का दिल दुखाये। उसने दूसरी बहुओं को खाना बनाने में उसकी मदद करने के लिए कहा। अचरज की बात यह थी कि आटे का टिन खाली था। टोकरी से कच्ची सब्जियाँ गायब थीं। तेल के डिब्बे में एक बून्द भी तेल नहीं था।

दयालु किसान अपने छोटे बेटे के साथ बाजार जाकर किराने का सामान, तेल और सब्जियाँ ले आया। सभी बहुओं ने मिल कर भोजन तैयार किया और सबने देर से रात का खाना खाया।

अगले शनिवार को बड़ी बहू घर पर रह गई। अभी उसने आग सुलगाई थी कि उसे किसी की आवाज सुनाई पड़ी, ''क्या मुझे थोड़ा तेल मिल सकता है, मालकिन जी?''

औरत बाहर आई और उसने एक भिखारी को देखा जिसने अपना सवाल दुहराते हुए कहा, ''मेरे पूरे शरीर में खुजली हो रही है, और मैं तेल
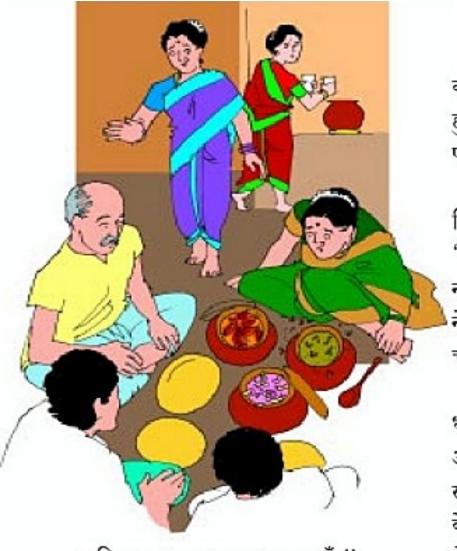
मालिश कर स्नान करना चाहता हूँ।''

उसके काम में बाधा पड़ जाने के कारण स्त्री आग बबूला हो गई। उसे सन्देह होने लगाः क्या यही भिखारी पिछले शनिवार कोआटा और सब्जी चुरा ले गया? ''अरे दुष्ट! मुझे पूरा विश्वास है कि तुमने ही आटा, तेल और सब्जी चुराई होगी। यहाँ से फौरन चले जाओ।'' वह उस पर चीखने - चिल्लाने लगी।

भिखारी ने विरोध किया, ''भली स्त्री! मैं चोर नहीं हूँ। मैं चोरी करने का साहस नहीं कर सकता। मेहरबानी करके थोड़ा तेल और सिर्फ एक रोटी दे दो। मैं तुम्हारी खुशी के लिए प्रार्थना करूँगा।''

''मुझे तुम्हारी प्रार्थनाओं और आशीर्वादों की जरूरत नहीं है'', औरत ने रुखाई से कहा, फिर वह अन्दर गई और एक छड़ी लाकर उसे धमकाती हुई बोली, ''क्या मुझे तुम्हें यहाँ से जबरन भगाना पड़ेगा?''

''हे स्त्री, तुमने मेरे अनुरोध को ठुकरा दिया!'' भिखारी ने स्त्री को कड़ी नज़र से देखते हुए कहा, ''आज का तुम्हारा बनाया भोजन वे स्वीकार नहीं करेंगे जिनके लिए तुम बनाओगी।'' भिखारी ने मानों उसे शाप दिया और इतना कह कर वह चला गया।

स्त्री ने उसे पागल समझ कर उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह खाना तैयार कर सब के आने का इन्तजार करने लगी। जब सब खाना खाने बैठे तब वह सारे पकवान ले आई और सब के ढक्कन हटाये। लेकिन यह क्या? एक पकवान में कीड़े रेंग रहे थे। दूसरे में पिस्सू थे। किसी में चींटियाँ चल रही थीं और किसी अन्य पकवान में अन्य कृमियाँ थीं। वह डर गई और रोने लगी और दौड़ कर रसोई घर में चली गई।

किसान ने स्थिति को भाँप लिया। ''मुझे भय है कहीं हमलोगों ने देवी-देवताओं को नाराज तो नहीं कर दिया है। नहीं तो पिछले शनिबार और आज की तरह घटनाएँ क्यों घटतीं? हमें उन्हें प्रसन्न करने के लिए कुछ करना होगा।''

किसान अपने सबसे बड़े बेटे के साथ बाजार जाकर आटा, दाल, तेल, सब्जियाँ ले आया और तीनों बहुओं को मिल कर भोजन पकाने को बोल दिया।

अगले शनिबार को पुनः सबसे छोटी बहू की

बारी थी। वह खाना बनाना शुरू करनेवाली ही थी कि उसे एक परिचित आवाज सुनाई पड़ी। वह तेल माँगनेवाला भिखारी था। वह आकर बोली, ''तुम कुछ दिन पहले आये थे और मैंने तुम्हें तेल दिया था। क्या अब तक तुम्हारी खुजली और ददोरे ठीक नहीं हुए?'' वह फिर अन्दर जाकर तेल की बोतल ले आई और उसकी तलहथी पर कुछ तेल डाल कर बोली, ''नहा कर वापस आ जाना, मैं तुम्हें कुछ खाने को दूँगी।''

वह पत्तों का दोना लेकर आया। खाना खाकर उसने स्त्री को आशीर्वाद दिया, ''तुम और तुम्हारे पति चिरंजीवी हों।'' जाते समय उसने दोने को छप्पर में खोंस दिया। स्त्री ने उसे ऐसा करते देख लिया था, लेकिन वह चुपचाप रही।

शाम को स्त्री का बना खाना सबको बहुत स्वादिष्ठ लगा। किसान ने कहा, ''यह सब कुछ बहुत विचित्र लगता है! एक शनिवार को भोजन गायब हो गया। दूसरे शनिवार को भोजन में कीड़े भरे पड़े थे। लेकिन आज का भोजन स्वादिष्ठ है। ऐसा मालूम पड़ता है कि देवी-देवता अब हम से नाराज़ नहीं हैं।''

सबसे छोटी बहू ने,जो अभी खाना खाने बैठी थी, दो शनिवारों को, जब वह घर पर थी, एक भिखारी के आगमन का सारा वृत्तान्त बता दिया। और यह भी कहा कि उसने पत्तों के दोने को छप्पर में अटका दिया था।

किसान उठ कर देखनेगया कि क्या पत्ते अभी भी हैं। वे अब भी छप्पर में अटकाये हुए थे। जब उसने उसे हाथ से खींचा तब उसका एक पत्ता उसके हाथ में आ गया जिसमें बहुमूल्य रत्न भरे थे। फिर उसने दूसरा पत्ता खींचा जिसमें सोने के सिक्के थे। किसान, उसके तीनों बेटे तथा बहुएँ सभी हैरान थे। सबसे बड़ी बहू और बीचवाली बहू को एक भिखारी के आगमन की याद आई जिसे इन दोनों ने बिना तेल और भोजन दिये लौटा दिया था।

किसान ने कहा, ''मैं समझता हूँ कि शनि देवता स्वयं यहाँ भिखारी के वेश में आये थे। वे अब प्रसन्न हैं।''

उसके पड़ोसियों तथा अन्य ग्रामीणों ने शीघ्र ही यह कहानी सुनी। तब से अब तक शनिवार के दिन तेल को शनि देवता की मुख्य भेंट माना जाता है जिनकी सामान्यतः शनिवार को पूजा की जाती है।
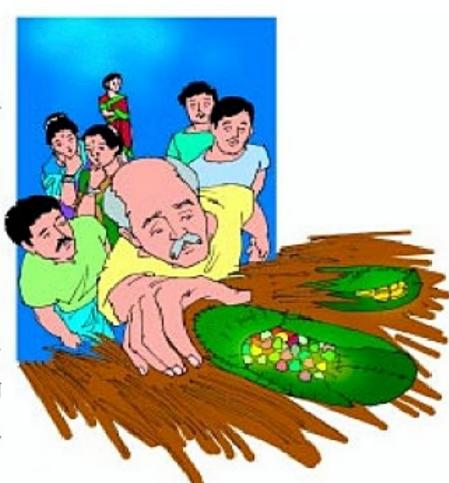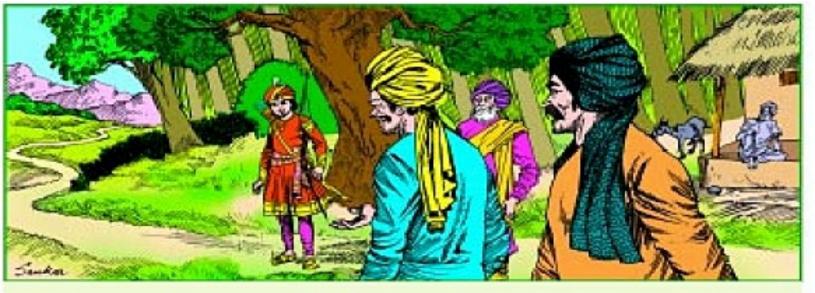
पंचायुध

ब्रह्मदत्त जिस समय काशी पर शासन करते थे, उन दिनों बोधिसत्व ने युवराजा के रूप में जन्म लिया। नामकरण उत्सव के दिन अनेक देशों से ज्योतिषी आये। उन लोगों ने राजा से बताया– ''महाराज, यह बालक बड़ा ही होनहार है। पाँच आयुधों के द्वारा सारे संसार को जीत सकनेवाला पराक्रमशाली है।'' यों कहकर उस बालक का सबने पंचायुध नामकरण किया।

थोड़े दिन बीत गये। बड़ा होने पर तब उसे गांधर्व देश के तक्षशिला नगर में महा पंडितों के पास विद्याभ्यास करने के लिए भेजा गया।

पंचायुध तक्षशिला में कुछ बर्ष तक विद्याभ्यास करके सभी शास्त्रों में पारंगत हो गया। गुरुकुल से विदा होते वक़्त गुरु ने शिष्य को आशीर्वाद देकर पाँच आयुध प्रदान किये। इसके बाद पंचायुध अपने गुरु की अनुमति लेकर काशी राज्य के लिए चल पड़ा।

मार्ग के मध्य में पंचायुध को एक बहुत बड़ा जंगल पार करना पड़ा। जब वह जंगल के रास्ते जा रहा था, तब कुछ लोग उसके सामने से गुजरे। उन लोगों ने पंचायुध को समझाया, ''बेटा, तुम तो छोटी उम्र के हो! इस घने जंगल में रोमांच नामक राक्षस निवास करता है। उसकी दृष्टि में पड़ जाओगे तो तुम्हारी जान की खैर नहीं। इसलिए तुम इस मार्ग को छोड़कर किसी दूसरे रास्ते से इस जंगल को पार करो।''

पराक्रमी पंचायुध ने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह उसी जंगल के रास्ते पर चलने लगा। एक जगह ताड़ -सा ऊँचा रोमांच राक्षस उसके सामने आ खड़ा हुआ।

रोमांच देखने में भयंकर लग रहा था। उसका सर भारी था। उसकी आँखों से अंगारे छूट रहे थे। हाथी के जैसे उसके मुँह से दो दांत निकल आये थे। सारे बदन में भालू जैसे रोयें फैले हुए थे।

राक्षस रोमांच ने पंचायुध का रास्ता रोककर पूछा, ''अबे, तुम कौन हो? कहाँ जा रहे हो? रुक जाओ ! मेरे नाम से ही लोग थर-थर कांप उठते हैं। लो, मैं अभी तुम को निगलने जा रहा हूँ।''

पर पंचायुध जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने कहा, ''हे राक्षस राजा! मैं जान-बूझकर ही इस जंगल से होकर चला जा रहा हूँ। ख़बरदार! तुम मेरे नजदीक़ मत आओ।'' ये शब्द कहते पंचायुध ने अपने तीर का निशाना बनाकर राक्षस पर छोड़ दिया।

सर्र से जाकर तीर राक्षस के धारण किये हुए जानवर के चमड़ों से जा लगा। लेकिन उसे कोई घाव नहीं हुआ। इस बार पंचायुध ने लगातार दो-चार बाण छोड़ दिये, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। अंत में जहर में बुझे बाणों का उस पर प्रयोग किया। पर राक्षस की कोई हानि नहीं हुई।

राक्षस जोर से हुंकार करके पंचायुध पर हमला कर बैठा। पंचायुध ने अपना खड्ग उस पर फेंक दिया, फिर भी राक्षस विचलित नहीं हुआ।

इस पर पंचायुध ने राक्षस से कहा, ''तुम अपने अज्ञान की वजह से मुझ को पहचान नहीं पा रहे हो! मेरा नाम पंचायुध है। इस जंगल में प्रवेश करते समय मैं सिर्फ़ अपने आयुधों पर विश्वास करके नहीं चला।'' यों कहक र उसने अपनी मुट्ठी बांधकर राक्षस पर प्रहार किया। फिर भी राक्षस विचलित नहीं हुआ।

राक्षस अट्टहास करके बोला, ''अबे लड़के! तुम मुझे साधारण मानव के जैसे नहीं लगते हो! तुमने मेरा सामना करने का साहस किया। मानव तो मेरे रूप को देख कर ही कांप उठते हैं ! लेकिन

तुम्हें अपने प्राणों का डर नहीं है! इस बात का मुझे आश्‍चर्य होता है! इसकी वजह क्या है?''

''आखिर डर किसलिए ! हर एक प्राणी के जन्म के साथ ही मरण लगा रहता है। अलावा इसके मेरे शरीर में वज्र के जैसा ज्ञान का एक खड्ग है। अगर तुम मुझको निगल डालोगे तो वह खड्ग तुमको चीर डालेगा।''

राक्षस पल-दो-पल सोचता रहा, तब बोला, ''लड़के! तुम्हारी बातों में मुझे कोई सत्य नज़र आता है! चाहे जो हो तुम तो निडर हो। शूर-बीर हो। तुम जैसे व्यक्ति को मैं निगल भी डालूँ, पर तुम्हें हजम करना मेरे लिए मुश्किल है। अब तुम स्वेच्छापूर्वक अपने रास्ते जा सकते हो।''

पंचायुध के रूप में जन्म लेनेवाले बोधिसत्व ने राक्षस को आशीर्बाद देकर कहा, ''तुमने मुझे छोड़ दिया, बड़ी अच्छी बात है। लेकिन तुम्हारा क्या होगा? कई जन्मों से ऐसे दुष्ट कार्य करते हुए तुम यों निकृष्ट जीवन बिता रहे हो। इस बात का मुझे दुख है!''

''महानुभाव, क्या इस अज्ञान रूपी अंधकार से निकलने का कोई रास्ता भी है? अगर हो तो कृपया बताइये।'' राक्षस ने हाथ जोड़कर पूछा।

''तुम इस जंगल को अपना निबास बना कर इस रास्ते से गुजरने बाले मानवों को पकड़ कर ख़ाते हो और इस तरह तुम अपना पाप बढ़ाते जा रहे हो। तुम्हें कभी मोक्ष प्राप्त न होगा। यदि तुम सब प्राणियों में उत्तम मानव जन्म चाहते हो तो तुम पाप करना छोड़ दो।''

यों बोधिसत्व ने राक्षस को उपदेश किया। इसके बाद बोधिसत्व ने राक्षस को मानवों के द्वारा हित पाने के लिए अनुसरण करने योग्य पांच महा सूत्रों तथा मानवों को तुच्छ बनानेवाले पांच तंत्रों का विवरण विस्तार के साथ दिया।

उस दिन से रोमांच ने राक्षस कार्य छोड़ दिया। साथ ही जंगल से गुजरनेवाले मुसाफ़िरों को आतिथ्य देते हुए धर्म स्वभाव रखनेवाले के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार बोधिसत्व के धर्मोपदेश के कारण राक्षस उत्तम मार्ग का अनुयायी बन गया।

विष्णु पुराण

श्रीमती के स्वयंवर में भाग लेने के लिए अनेक देशों के राजा-महाराजा पधारे । विष्णु के दिये हुए 'हरि-रूप' में नारद भी आ पहुंचे । उनका हरि यानी बानर रूप देख कर वहाँ के उपस्थित लोग हँस पड़े । जब नारद को यह मालूम हुआ तो वे पानी-पानी हो गये ।

श्रीमती ने वरमाला लेकर विष्णु का ध्यान किया । ध्यान करते ही विष्णु प्रकट हो गये । श्रीमती ने उनके गले में वरमाला डाल दी और उनके साथ बैकुण्ठ चली गई।

यह सब देख कर नारद को क्रोध आ गया । उन्होंने पर्वत को अपने पक्ष में कर लिया और दोनों अंबरीष पर बरस पड़े । क्रोध से पागल हो नारद अंबरीष को शाप देने ही जा रहे थे कि विष्णु के चक्र नारद पर टूट पड़े ।

पर्वत और नारद जान लेकर बैकुण्ठ की ओर भागे। वहाँ श्रीमती को विष्णु के साथ देख कर नारद का क्रोध और भी भड़क गया और उन्होंने विष्णु को शाप दे दिया- ''जिस श्रीमती को आपने छल-बल से प्राप्त किया है वह अपहृत हो जायेगी और आप उसके वियोग में तड़पेंगे। मेरा अपमान करने के लिए आप ने मुझे जिसका रूप दिया है, वे ही आप की खोई पत्नी को ढूँढ कर लायेंगे और आप उन्हीं की शरण में जायेंगे ।''

नारद का शाप सुन कर बिष्णु मुस्कुराने लगे। तभी श्रीमती ने अपना वास्तविक रूप (लक्ष्मी का रूप) ग्रहण कर लिया और बिष्णु ने पर्वत तथा नारद की आँखों से माया की पट्टी हटा ली। जब ये मुनि अपनी चेतना में वापस लौटे तो लज्जित होकर विष्णु के चरणों में गिर पड़े और

१०. दुर्वासा का गर्व-भंग
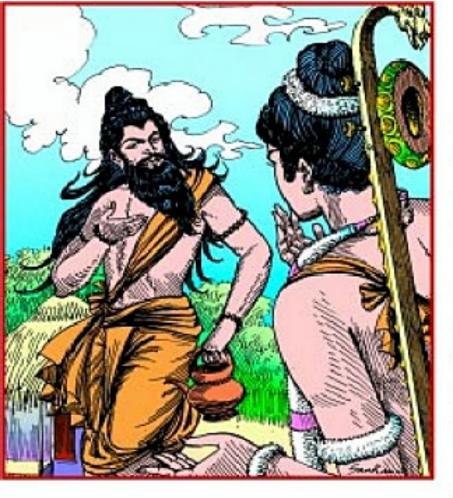
क्षमा प्रार्थना करने लगे । नारद को बहुत ग्लानि हुई कि माया के बस में आकर उन्होंने विष्णु को शाप दे दिया । वे उनके चरणों में रो-रोकर पछताने लगे ।

इस पर विष्णु नारद को सान्त्वना देते हुए बोले -''तुम तो त्रिकाल दर्शी हो । तुम्हें तो मालूम है कि भावी क्या है । फिर इसके लिए दु:ख या पछतावा करने की क्या आवश्यकता है?

''तुम्हारा शाप भी हमारे संकल्प से ही उत्पन्न हुआ है। तुम्हारी वाणी रामावतार में सच होकर रहेगी और इससे लोक-कल्याण ही होगा ।''

इसके बाद उसी समय से अंबरीष की रक्षा के लिए विष्णु ने चक्र को नियुक्त कर दिया ।

दुर्वासा ऋषि में तपोबल का गर्व था। उनमें ईर्ष्या-द्वेष की भावना भी बहुत थी ।

एक बार जब वे अपने आश्रम से बाहर जानेवाले थे, तभी हरि भजन में लीन रहने वाले देवर्षि नारद वहाँ आ पहुंचे । दुर्वासा ने नारदसे कहा- ''कलह रूपी भोजन से तुम्हारा पेट बहुत भर गया है, इसलिए शायद प्रसन्न चित्त दिखाई दे रहे हो !''

नारद ने ऋषि को प्रणाम करके कहा- ''ऐसा भोजन तो अभी मिला नहीं है लेकिन भूख जरूर लगी है। अभी हमारी प्रसन्नता का कारण तो यह है कि मैं परम विष्णु भक्त अंबरीष से मिल कर चला आ रहा हूँ। उनकी भक्ति देख कर मन और प्राण आनन्द से झूम उठते हैं ।''

अम्बरीष की प्रशंसा सुन कर दुर्वासा के मन में जलन-सी हुई । उन्होंने सन्देह भाव से पूछा- ''क्या अंबरीष इतने बड़े भक्त हैं कि उनके नाम मात्र से आप में आनन्द उमड़ रहा है !''

''निरसन्देह ऋषिवर! विष्णु की विशेष कृपा है उन पर । वे राजा होकर भी ऋषि हैं । वे नियमित रूप से द्वादशी व्रत रखते हैं। उनके दर्शन करने के बाद आप भी अनुभव करेंगे कि मैं उनकी झूठी प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ । वे सचमुच बहुत महान हैं और विष्णु के परम प्रिय भक्त हैं । आप के दर्शन से वे अपने को कृतार्थ समझेंगे ।'' इतना कह कर 'नारायण-नारायण' कहते हुए नारद देखते-देखते अंतर्धान हो गये ।

दुर्वासा ने मन ही मन सोचा -''देखता हूँ यह कितना बड़ा भक्त है ! मैं इसकी परीक्षा लूँगा ।'' वे तुरंत अंबरीष से मिलने चल पड़े ।

राजा अंबरीष एकादशी और द्वादशी व्रत का

पालन करके पारण करने ही वाले थे कि दुर्वासा ऋषि के आगमन का समाचार मिला। अंबरीष ऋषि के दर्शन से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने विधिवत उनका सत्कार किया और भोजन स्वीकार करने की प्रार्थना की।

दुर्वासा ऋषि ने भोजन का निमंत्रण स्वीकार कर लिया लेकिन स्नान करके बहुत देर से लौटे। इधर द्वादश व्रत के पारण का समय खत्म होने वाला था। यदि अंबरीष समय रहते पारण न करते तो उनका व्रत भंग हो जाता।

लेकिन अतिथि को निमंत्रित करके पहले स्वयं भोजन भी नहीं कर सकते थे। धर्म के अनुसार इसमें भी दोष लगता था। इसलिए वे दुविधा में पड़ गये।

कुछ पंडितों ने यह सलाह दी कि जल का पारण कर लेने से दोष नहीं लगेगा और पारण हो जाने के कारण व्रत भी भंग नहीं माना जायेगा। अम्बरीष ने यह सलाह मान ली।

लेकिन तभी क्रोधाग्नि में जलते और दाँत पीसते हुए दुर्वासा आ पहुँचे और अम्बरीष को गालियाँ देने लगे-

"अरे नीच राजा, पापी, अधर्मी! तुम अपने को व्यर्थ ही विष्णु का परम भक्त मानते हो! तुम्हारा यह अभिमान झूठा है। तुमने मुझे निमंत्रित करके स्वयं भोजन कर लिया! अब मेरे शाप से तुम्हें कोई नहीं बचा सकता।"

अम्बरीष उनके क्रोध से विचलित नहीं हुए और उनके चरणों में अपना मस्तक रख कर बोले-

"मैंने पंडितों के परामर्श से, व्रत भंग होने के डर से, वेदों के नियमानुसार ही केवल जल-पारण किया है। भोजन के लिए मैं आप की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। अतः कृपा करके शान्त हो जायें और मुझे क्षमा कर दें।"

"क्षमा? दुर्वासा क्षमा करना नहीं जानता। तुम्हें अपने पाप का फल भोगना ही पड़ेगा। अब तुम्हें मालूम हो जायेगा कि भक्ति बड़ी है या तपस्या की शक्ति।"

उन्होंने क्रोध के आवेश में अपनी एक लम्बी जटा को ज़ोर से झाड़ते हुए योगदण्ड से उसका स्पर्श किया। बस! पलक मारते ही जटा से अग्नि के कण बरसने लगे और आकाश काले धुएं से भर गया। फिर काले धुएं से पर्वत जैसा विशाल एक भयंकर राक्षस प्रकट हुआ — कृत्य।
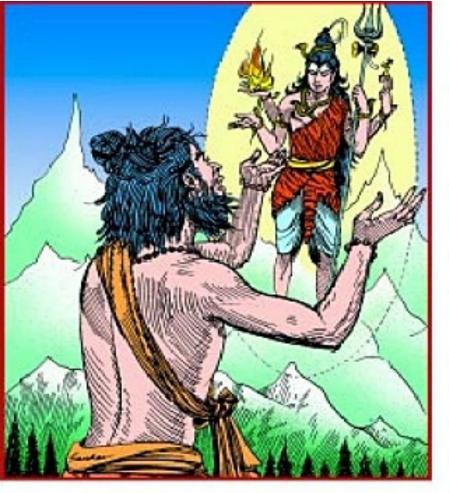
प्रकट होते ही कृत्य अंबरीष पर झपटा। तभी, सुदर्शन चक्र प्रकट हो गया और आग की वर्षा करने लगा। देखते-देखते कृत्य जल कर भस्म हो गया।

यह दृश्य देख कर दुर्वासा ऋषि अचंभित रह गये। सुदर्शन चक्र कृत्य को मार कर दुर्वासा ऋषिकी ओर दौड़ा।

दुर्वासा ने एक और जटा तोड़ कर सुदर्शन चक्र की ओर फेंका। जटा से एक विशाल चट्टान निकली जिसने चक्र को रोक दिया। चक्र के स्पर्श से चट्टान छिन्न-भिन्न हो गई। दुर्वासा ने चक्र को फिर अपनी ओर आते देख कर एक जटा फेंक दी।

इससे सारा आकाश काले मेघों से भर गया और सुदर्शन चक्र उसमें खो गया। किन्तु दूसरे ही क्षण सुदर्शन चक्र की किरणों ने उन बादलों को जला कर भस्म कर दिया।

यह देखकर दुर्वासा ऋषि बहुत घबरा गये और भयभीत हो भागने लगे। सुदर्शन चक्र उनका पीछा करने लगा। चक्र की किरणों से दुर्वासा की जटाएं जल कर भस्म हो गयीं और उनके साथ ही उनका सारा तपोबल भी नष्ट हो गया।

दुर्वासा ऋषि तीनों लोकों में भागते-भागते ब्रह्मा के लोक में पहुँचे। वहाँ उनकी भेंट नारद से फिर हो गई। उन्होंने दुर्वासा को भागते हुए देख कर मुस्कुराते हुए पूछा-"इतनी जल्दी में आप कहाँ जा रहे हैं?" लेकिन उनके पास ठहर कर जवाब देने का समय नहीं था। उन्होंने पीछे आते हुए चक्र की ओर संकेत भर किया और जाकर ब्रह्मा के चरणों में गिर पड़े।

"बचाइए, रक्षा कीजिए ब्रह्मदेव! सुदर्शन चक्र मेरा पीछा कर रहा है।"

ब्रह्मा ने अपनी लाचारी प्रकट करते हुए समझाया- "ऋषिवर! आप तो जानते हैं कि मेरा जन्म उस कमल में से हुआ है जो विष्णु की नाभि से निकला है। मैं भला उनके चक्र को कैसे रोक सकता हूँ?"

दुर्वासा ऋषि वहाँ से भाग कर शिव लोक-कैलास पहुँचे और उन्होंने शिव के चरणों में गिर कर प्राण - रक्षा की प्रार्थना की।

शिव ने ध्यान टूटते ही दुर्वासा की ओर आते हुए सुदर्शन चक्र को देखा। वे बोले- "यह तो विष्णु चक्र तुम्हें मारने आ रहा है। उनके चक्र

को उनके अलावा कौन रोक सकता है ? स्वयं विष्णु ही तुम्हारी सहायता कर सकते हैं ।''

दुर्वासा का अहंकार पिघल चुका था । उनकी तपस्या की सारी शक्तियाँ नष्ट हो चुकी थीं और अब वे असहाय और निर्बल अनुभव कर रहे थे । जब ब्रह्मा और शिव दोनों ने इनकी रक्षा करने से मुहँ मोड़ लिया तब वे लाचार हो विष्णु की शरण में पहुंचे ।

''मैंने बहुत पहले ही अपने परम भक्त अंबरीष की रक्षा के लिए सुदर्शन चक्र को नियुक्त कर दिया था । अब तो मेरा चक्र उसी की आज्ञा का पालन करेगा । आप कृपा कर अम्बरीष से ही रक्षा की प्रार्थना कीजिए।'' यह कहते हुए विष्णु ने भी रक्षा करने से इनकार कर दिया ।

बहुत हिम्मत करके तो वे विष्णु के पास आये थे क्योंकि उनके ही भक्त अंबरीष को नाहक सताने के कारण इस आपत्ति में आ फँसे थे । अब क्या मुँह लेकर वे अंबरीष के पास जायेंगे ? लेकिन प्राण-रक्षा का कोईउपाय भी न था । चक्र निरन्तर उनका पीछा कर रहा था । तीनों लोकों के स्वामी भी उनकी रक्षा में असमर्थ थे । यह सब सोच कर उनका रहा-सहा अहं भी धुल गया और वे अपने को एक क्षुद्र प्राणी समझने लगे । गर्व खत्म होते ही वे एक निर्बल व्यक्ति की तरह अंबरीष के चरणों को छूकर प्राणों की भीख माँगने लगे ।

यह दृश्य देख कर सुदर्शन चक्र स्वयं ही अदृश्य हो गया । इस घटना के बाद अंबरीष का नाम विष्णु के परम भक्तों में लिया जाने लगा ।
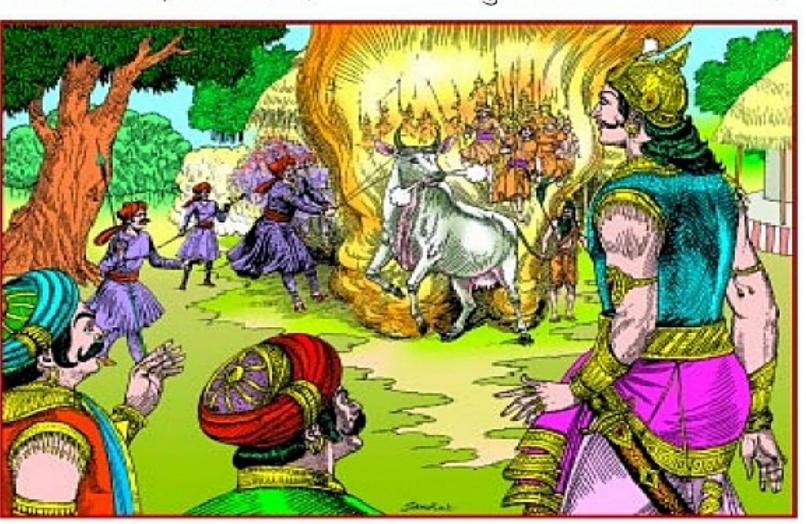
सूर्यवंशी राजाओं में गाधि बहुत प्रतापी राजा हुए। विश्वामित्र उन्हीं के पुत्र थे।

विश्वामित्र ने कृताश्व से धनुर्विद्या सीखी थी और अनेक दिव्यास्त्रों को सिद्ध किया था। वे इस विद्या में बड़े प्रवीण माने जाते थे।

राजा बनने के बाद वे एक बार वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में गये। वसिष्ठ ने अपनी कामधेनु की कृपा से राजा विश्वामित्र तथा उनके सैकड़ों सैनिकों और अधिकारियों को बहुत भारी भोज दिया। इस पर विश्वामित्र ने वसिष्ठ से अनुरोध किया- "यह कामधेनु मुझे दे दीजिए और बदले में चाहे आप दस लाख गायें ले लीजिए।"

लेकिन वसिष्ठ ने इस अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। इस पर विश्वामित्र को क्रोध आ गया और उन्होंने अपने सैनिकों को जबर्दस्ती कामधेनु हाँक ले जाने का आदेश दिया।

तभी एक और विचित्र घटना हो गई कामधेनु के शरीर से हजारों सैनिक उत्पन्न हुए जिन्होंने विश्वामित्र की सेना को पलक मारते ही नष्ट कर दिया। यह दृश्य देख कर विश्वामित्र को आश्चर्य हुआ और यह सोचने लगे कि योग की शक्ति के सामने राजा की शक्ति कितनी तुच्छ है।

यह विचार आते ही उन्होंने राज्य से वैराग्य ले लिया और तपस्या करने लगे। घोर तपस्या द्वारा उन्होंने ब्रह्मर्षि का सबसे ऊँचा पद प्राप्त किया।

एक बार वे एक महायज्ञ प्रारम्भ कर रहे थे। उन दिनों राक्षसराज रावण के अनुचर मारीच, सुबाहु तथा राक्षसी ताड़का आर्यावर्त में आकर तपस्या और यज्ञ में विघ्न डालते थे। ये राक्षस विश्वामित्र के यज्ञ को भी भंग कर रहे थे। तंग आकर ये हिमालय में जाकर तपस्या करने लगे।

समाधि में ही विश्वामित्र को यह ज्ञान हुआ कि विष्णु ने लोक कल्याण के लिए रघुवंश में राम के रूप में अवतार लिया है। वे धर्म को नष्ट करने वाले राक्षसों के संहार के लिए धरती पर आये हैं। समाधि में ही उन्हें यह प्रेरणा मिली कि राम को शस्त्र विद्या की शिक्षा देने के लिए वे उपयुक्त गुरु हैं। यह प्रेरणा मिलते ही वे अयोध्या के लिए चल पड़े।

व्यापार में होड़

रोहन और भूषण उस शहर में प्रमुख व्यापारी थे। दोनों के बीच में तगड़ी होड़ थी। एक दिन, एक युवक भूषण के पास आया। काम में तल्लीन भूषण ने थोड़ी देर के बादसिर उठाया और उससे पूछा कि तुम कौन हो और किस काम पर आये हो।

‘‘महोदय, मेरा नाम बालाजी है। रोहन जी के यहाँ नौकरी करता था। वे कम वेतन देते थे, इसलिए मैंने वहाँ काम छोड़ दिया। आपके यहाँ काम मिले तो करूँगा।’’ भूषण ने पूछा, ‘‘इसका क्या भरोसा कि यहाँ वेतन बढ़ाने की माँग पेश नहीं करोगे?’’ ‘‘वेतन पर्याप्त न हो तो बाद में वेतन बढ़ाने की विनती करना कोई ग़लती नहीं है न?’’ बालाजी ने सविनय कहा।

‘‘समझ लो, मैंने तुम्हें काम पर रख लिया, इससे मुझे विशेष लाभ क्या होगा?’’ भूषण ने पूछा। बालाजी ने कहा, ‘‘आप क्या कहना चाहते हैं, मेरी समझ में नहींआया।’’

‘‘मेरे कहने का मतलब यह है कि क्या तुम मुझे बता सकते हो कि रोहन के व्यापार की उन्नति के लिए क्या-क्या क़दम उठाये जा रहे हैं, आदि।’’ भूषण ने पूछा। ‘‘माफ़ कीजियेगा। मैं आपको तत्संबंधी विवरण नहीं दे सकता। वहाँ के राज़ बता दूँगा तो आप मुझे काम पर नहीं रखेंगे।’’

‘‘तुम्हें यह शक क्यों हो गया?’’ भूषण ने पूछा। ‘‘आप पूछेंगे कि इसका क्या भरोसा कि तुम यहाँ की बातें वहाँ नहीं बताओगे,’’ बालाजी ने कहा।

उसका जवाब सुनते ही भूषण ठठाकर हँस पड़ा और कहा, ‘‘बालाजी, तुम्हारा उत्तर तुम्हारी अक़्लमंदी ही नहीं बताता बल्कि तुम्हारी ईमानदारी भी बताता है। मेरे और रोहन के बीच होड़ है तो व्यापार के विषयों में ही है, न कि काम करनेवालों के विषय में। आ जाओ, आ जाओ, लो संभालो ये बहियाँ और काम पर लग जाओ।’’

- चंदन रावत
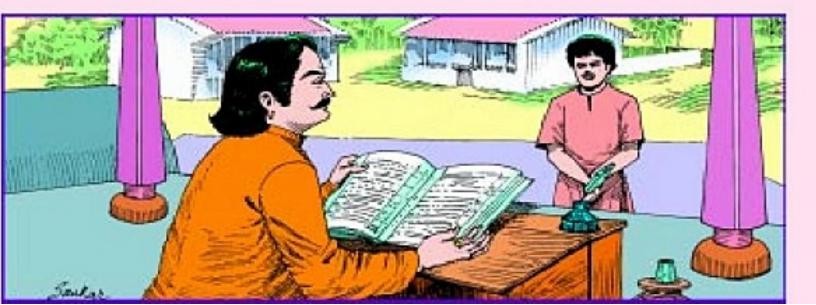
अमरीकी कृन्तक की पूँछ छोटी क्यों है?

यह एक चिरोकी कथा है। चिरोकियों का ऐसा विश्वास था कि पशु आज के अपने प्रतिरूपों की अपेक्षा अधिक बड़े, अधिक मजबूत और अधिक परिपूर्ण होते थे। मनुष्यों के साथ समान स्तर पर मिलने-जुलने और उनसे बात करने की उनसे आशा की जाती थी।

अमरीकी कृन्तक के पेट में चूहे कूद रहे थे। ''ओह! ''कितना अच्छा होता यदि सुरंग में'', जो उसका घर था, ''कोई खाना परोस जाता,'' उसने ख्याली पुलाव पकाया। ''यदि ख्वाहिशें घोड़े बन जायें तो उल्लू के पट्ठे सवारी न करें?'' उसे यह कहावत याद आई जो उसने मनुष्यों के एक सायबान के निकट दौड़ते समय संयोग से सुन लिया था। वह बेवकूफ नहीं था। वह जानता था कि उसे उसके बिल में भोजन परोसने कोई नहीं आयेगा! उसे अपने लिए इन्तजाम करना ही था।

इस विचार ने उसे बेचैन कर दिया। भोजन की तलाश करने के लिए उसे घर की सुरक्षा से बाहर जाना होगा, जहाँ उसे ही भोजन बनाने के लिए परभक्षी घूमते रहते हैं। वह परभक्षियों का शिकार बनना नहीं चाहता था।

तब उसने अपने भय को हँसी में उड़ा दिया। वह अनेक बार मौत से बच निकला था। खतरों से निबटने के लिए उसके पास काफी अक्ल थी।

इस विचार से उसमें उत्साह भर गया। वह अपने बिल की ढाल पर दौड़ने लगा। जमीन की सतह से लगे मुहाने पर आकर वह थोड़ी देर रुका। फिर अपना सिर बाहर निकाल कर चारों ओर के दृश्य पर उसने एक नजर डाली। तट साफ था।

इससे उसमें स्फूर्ति आ गई। वह बिल से बाहर आया। घास और झाड़ियों के चारों ओर बड़े-बड़े वृक्ष थे।

अमरीकी कृंतक चारे की तलाश में इधर-उधर भटकता रहा। उसने स्वादिष्ठ जड़ों को खोद कर ठूँगा। उसने पहुँच में आनेवाले टिड्डों, झींगुरों और केंचुओं को

दबोच लिया। बीच-बीच में वह रुक-रुक कर यह देख लेता था कि वह अपने बिल से ज्यादा दूर तो नहीं आ गया। उसका बिल उसका बचाव-रस्सा था। वह उसके निकट ही रहना चाहता था ताके खतरा आने पर वह उसमें दौड़ कर शरण ले ले।

वह एक जड़ को खोदने में लगा था कि तभी उसे दौड़ते पैरों की आवाज सुनाई पड़ी। उसने सिर उठा कर देखा। वह भय से काँप उठा। भेड़ियों के एक झुण्ड ने उसे चारों ओर से घेर लिया था। एक भेड़िया बिल में जाने के मार्ग पर खड़ा था। ''क्या मेरे जीवन का अन्त आ गया?'' अमरीकी कृन्तक सशंकित था।

उसने तुरन्त इस बिचार को मार दिया। उसकी जगह पर डराबने बिचारों का ही मर जाना अच्छा है।

''मैं कामयाब रहूँगा।'' बह अपने आप बुदबुदाया। उधर सात भेड़िये उसे चिथड़े - चिथड़े कर देने को अपने दाँत पजा रहे थे।

''ओह दोस्तो,'' अमरीकी कृन्तक ने खुशी से मुस्कुराते हुए कहा, ''बधाई हो, तुम्हें भोजन मिल गया है।''

भेड़िये हक्का -बक्का रह गये। उन सबने किसी शिकार को इतना शान्त कभी नहीं देखा था। सब ने अपने नेता की ओर देखा।

''धन्यवाद,'' झुण्ड का नेता एक कदम आगे बढ़ा और बोला, ''लेकिन एक क्षण भी ज्यादा इन्तजार नहीं कर सकते। हमलोग बहुत भूखे हैं।''

''क्या भगबान की मेहरबानी के लिए उन्हें धन्यबाद देने में एक-दो मिनट नहीं लगाओगे? मुझे मालूम हुआ है कि भेड़ियों में, खास कर सभ्य भेड़ियों में यह एक रिवाज़ सा है।'' कृन्तक के झुण्ड के नेता की आँखों में देखा।

''लेकिन हमलोगों में से किसी की आवाज में संगीत नहीं है।'' नेता ने स्वीकार किया।

''कोई बात नहीं। मैं गाता हूँ और तुम सब नाचो।'' कृन्तक भेड़ियों पर मुस्कुराया और फिर बोला, ''मैं तुम लोगों में से हरेक के लिए गाऊँगा। मुझे बहुत-सी धुनें मालूम हैं। मैं जितने गीत जानता हूँ, उनमें से सर्वश्रेष्ठ सात गीत गाऊँगा। जब भी मैं नया गीत गाऊँगा, मैं भिन्न-भिन्न पेड़ के साथ अपनी पीठ लगा कर खड़ा रहूँगा। तुम सब नाचना, आनन्द से पाँव थिरकाना और गाना खत्म होने तक पीछे हटते जाना। मेरे अन्तिम गाने तक ऐसा ही करते रहना। सातवाँ गाना प्रभु की प्रशस्ति का होगा। जब मेरे सारे गाने खत्म हो

चुकेंगे, तब, बस, फिर मुझे चट अपना भोजन बना लेना।'' झुण्ड का नेता सहमत हो गया।

अमरीकी कृन्तक निकटतम वृक्ष के साथ पीठ लगा कर खड़ा हो गया। वह नेता पर मुस्कुराया और बोला, ''यह गाना तुम्हारे सम्मान में है।'' नेता के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान फैल गई।

कृन्तक ने गाना शुरू किया। भेड़िये आनन्द से नाचने लगे। वे खुले मैदान में वृत बना कर पीछे हटते गये और हवा में गीत गूँजने लगा। बेशक उनकी नजर कृन्तक पर लगी थी। उन्हें सन्देह था कि जब वे कुछ दूर हों तब वह कहीं खिसक न जाये। लेकिन कृन्तक गाना खत्म होने तक पेड़ से लगा रहा।

फिर भेड़िये नजदीक आ गये। कृन्तक अब दूसरे पेड़ के पास चला गया। और उससे पीठ लगा कर खड़ा हो गया। उसने गला साफ किया और नया गीत गाना शुरू किया।

इस बार भेड़ियों को कृन्तक पर कम सन्देह हुआ। हर गाना खत्म करने के बाद वह दूसरे पेड़ के पास चला जाता, पीठ के बल खड़ा होता और भेड़ियों के नाचने के लिए तैयार होने तक इन्तजार करता। उसमें भय का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ा। और न भागने की उसने कोई कोशिश की। इससे उसने भेड़ियों का विश्वास जीत लिया।

छठा गाना समाप्त हो गया। अब यह उसके नये पेड़ के पास जाने का समय था। उसने अपने बिल के प्रवेश द्वार को देखने के लिए एक क्षण का समय लिया। ''आह! यदि सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो मैं शीघ्र ही उस बिल में सुरक्षित पहुँच जाऊँगा।'' अपनी पीठ लगाने के लिए अगले वृक्ष की ओर देखते हुए उसने अपने मन में सोचा। उसने बड़ी सावधानी से वृक्ष का चुनाव किया।

तब उसने भेड़ियों के झुण्ड की ओर देखते हुए कहा, ''अब केवल एक गीत गाऊँगा। यह प्रभु के सम्मान में होगा।''

''तुम, कृन्तक, सच्चा मनोरंजन हो। यदि हम लोग इतने भूखे न होते तो तुम्हें छोड़ देते। लेकिन...'' नेता ने अपने तेज दाँतों को निपोरते हुए कहा।

"भूल जाओ। हमलोगों ने समझौता किया है। और समझौता तो समझौता होता है। हमें इसका पालन करना चाहिये। जैसे ही सात गीत पूरे हो जायेंगे, मुझे अपना भोजन बना सकते हो।"

कृन्तक ने नेता से पूछे बिना एक खुशनुमा धुन शुरू करने की घोषणा कर दी, "सातवें गीत, आखिरी नृत्य के लिए तैयार हो जाओ!"

"अवश्य," भेड़ियों ने खुश होकर कहा।

कृन्तक ने गाना शुरू किया। भेड़िये कृन्तक से दूर पीछे हटते हुए नाचने लगे। वातावरण संगीत की लहरों से भर गया। संगीत का स्वर बार-बार ऊपर उठता और गिर जाता। सुर द्रुत हो गये। भेड़िये तेजी से कदम बढ़ाते हुए चक्कर लगाने लगे और लड़खड़ाने लगे। तभी गाना खत्म हो गया। कृन्तक चिल्ला कर बोला, "मैं तैयार हूँ।" भेड़ियों को अपने कदम ठीक करने में समय लग गया। कृन्तक को उतने समय की जरूरत थी। वह सिरपर गाँव रख कर भागा। उतनी तेजी से वह कभी नहीं दौड़ा था। उसे विश्वास था कि उसने तेज गति का नया रेकार्ड बना लिया है। भेड़िये टूट पड़े, लेकिन किसी तरह वह अपनेबिल में घुसने में कामयाब हो गया। वह पहले अपने सिर को अन्दर ले गया। उसकी पूँछ का आखिरी हिस्सा अब भी बाहर था। भेड़ियों का नेता तभी ठीक समय पर वहाँ पहुँच गया और अपने दाँतों से उसकी पूँछ के सिरे को दबोच लिया। वह उसे काट सकता था लेकिन उसे कृन्तक को खींच कर बाहर ले आने की आशा थी। वह पूँछ को पकड़े रहा और पूरी ताकत से खींचता रहा। कृन्तक ने अपने पंजों से बिल की दीवारों को पकड़ लिया। कुछ देर तक खींचातानी चलती रही। अन्त में भेड़िये ने पूरी शक्ति लगा कर पूँछ को खींचा। तब कुछ अप्रत्याशित घटित हो गया। पूँछ का आखिरी हिस्सा निकल आया। भेड़िया धम्म-से पीछे जा गिरा।

"अमरीकी कृन्तक ने हमें उल्लू बना दिया", भेड़ियों ने कहा।

"हम लोगों ने उसे ऐसा करने दिया," झुण्ड का नेता गुर्राया।

कृन्तक अपने बिल में दौड़ता हुआ बहुत अन्दर तक चला गया। थोड़ा सुसताने के बाद अपनी पूँछ देखने में उसे कुछ समय लगा। यह छोटी हो गई थी, फिर भी सुन्दर लगती थी।

"अधिक सुरक्षित भी।" कृन्तक ने जान बच जाने की खुशी मनाई। तब से अमरीकी कृन्तक की पूँछ छोटी हो गई।

काली गोरैया

मालविका राज्य के अभयारण्य में एक मनोहर झोंपडी थी। वीरभद्र नामक एक वृद्ध और उसकी पोती चंद्रहासिनी का यह निवासस्थल था। चंद्रहासिनी सोलह साल की कन्या थी। जब से उसे होश आया, तब से दादा और पोती का निवासस्थल यह अरण्य ही था। इर्द-गिर्द का पूरा अरण्य उसे अच्छी तरह से मालूम था। उस अरण्य के जंतु उसके दोस्त बन गये थे।

चंद्रहासिनी अपने दादा को अपनी जान से भी ज्यादा चाहती थी। वह अक्सर उससे पूछा करती, ''दादा, हम अरण्य में क्यों रह रहे हैं?''

वीरभद्र बहुत पहले मालविका के राजा धीरसिंह का रथ सारथी था। एकबार धीरसिंह और पड़ोस के राजा चित्रवर्ण के बीच घमासान लड़ाई हुई। लड़ाई के दौरान चित्रवर्ण का फेंका भाला धीरसिंह को आ लगा और वह घायल हो गया। लड़ाई में यद्यपि धीरसिंह की ही जीत हुई, पर उसका समझना था कि वीरभद्र की असावधानी के कारण ही वह घायल हुआ, इसलिए उसने उसे नगर बहिष्कार की सज़ा सुनायी।

तब से लेकर वीरभद्र अपनी पोती चंद्रहासिनी के साथ अरण्य में ही रह रहा था, जिसके माँ-बाप उसकी शैशवावस्था में ही गुज़र चुके थे। एक बार चंद्रहासिनी जब झूले में झूल रही थी, तब उसकी नज़र एक काली गोरैये पर पड़ी। वह एक झाड़ी के पास असहाय-सी पंख हिलाती हुई पड़ी थी। चंद्रहासिनी उसके पास गयी और उसे अपने हाथों में लिया। उसने देखा कि गोरैये के पंखों को चोट लगी है और वह घायल है।

चंद्रहासिनी ने काली गोरैया के घाव पर पत्तियों का रस डाला और उसके खाने का भी इंतज़ाम किया। दूसरे ही दिन उसकी सेवाओं से वह चंगी हो गयी और कृतज्ञता-भरी आंखों से उसे देखने लगी।

रामानंद शर्मा

थोड़े ही दिनों में काली गोरैया का घाव पूरा का पूरा भर गया और देखते-देखते वे दोनों घने दोस्त बन गयीं।

एक दिन महाराज धीरसिंह कुछ सैनिकों के साथ उस झोंपड़ी के पास आया। उस समय बीरभद्र किसी काम पर बाहर गया हुआ था। धीरसिंह ने चंद्रहासिनी से पूछा, ''ऐ लड़की, पूरा अरण्य प्रदेश क्या तुम जानती हो?''

चंद्रहासिनी को यह ताड़ने में देर नहीं लगी कि वह आदमी महाराज है। उसने कहा, ''जानती हूँ, महाराज।''

''यह अच्छा हुआ कि मेरे बताये बिना ही समझ गयी कि मैं महाराज हूँ। मैं महाराज धीरसिंह हूँ। कुछ दिनों पहले मेरा इकलौता पुत्र शिकार करने इस अरण्य में आया। उस समय, एक बृक्ष के तले तपस्या में मग्न एक तपस्वी के सिर पर मेरे एक अहंकारी सैनिक ने, मरी हुई एक काली गोरैये को रख दिया। क्रोध में आकर तपस्वी ने आँखें खोलीं तो मेरे पुत्र को सामने पाया। तपस्वी को लगा कि यह करतूत उसी की है, तो उसने अपनी मंत्र-शक्ति से बिना सोचे-विचारे मेरे पुत्र को काली गोरैया में बदल डाला। सैनिकों द्वारा मुझे यह समाचार मालूम हुआ। मैं उसी काली गोरैया की खोज में इस अरण्य में आया हूँ।''

तब चंद्रहासिनी ने कहा, ''प्रभु, मैंने उस काली गोरैया को सिर्फ देखा ही नहीं बल्कि उस घायल पक्षी की रक्षा भी की। वह यहीं कहीं होगी।'' यह कहते हुए उसने ताली बजायी।
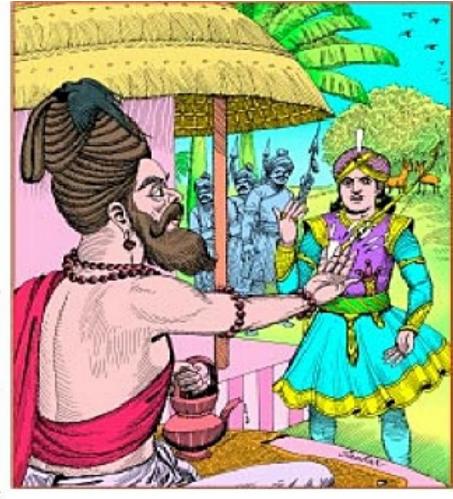
दूसरे ही क्षण वह काली गोरैया उड़ती हुई आयी और चंद्रहासिनी के कंधे पर बैठ गयी। उस गोरैया को देखकर राजा को लगा, मानों उसका बेटा उसे वापस मिल गया हो।

''प्रभु, समझ में नहीं आता कि राजकुमार को उसका असली रूप कैसे मिल पायेगा,'' चंद्रहासिनी ने कहा।

''कन्या, यही बात मैं भी कहने जा रहा था। जिस तपस्वी ने शाप दिया है, उसके पास मैं गया था। मैंने उसे बताया कि अपराध राजकुमार से नहीं बल्कि एक अहंकारी सैनिक से हुआ है। अकारण ही दंडित राजकुमार के प्रति उनके हृदय में दया भर आयी। उन्होंने मुझे मंत्रित जल दिया और कहा कि उस काली गोरैये पर इस जल को छिड़कने से राजकुमार असली रूप में प्रकट हो

जायेगा।'' राजा ने पूरा विवरण दिया।

राजा की इन बातों से बेहद खुश चंद्रहासिनी ने कहा, ''प्रभु, तब तो समस्या का परिष्कार आसानी से हो गया।''

राजा समझ नहीं सका कि उसके यों कहने का क्या मतलब है। उसने पूछा, ''वह कैसे?''

''महाराज, मेरे दादा वीरभद्र आपके रथ सारथी थे। मैं उन्हीं की पोती हूँ। मेरा नाम चंद्रहासिनी है। लड़ाई के दौरान जब शत्रु राजा ने भाला फेंककर आपको घायल किया तब आपने बिना सोचे-विचारे ही मेरे दादा को नगर से निकल जाने की सज़ा सुनायी। परंतु, मेरे दादा अपने देश को, अपने महाराज को बहुत चाहते हैं। आप दोनों के प्रति उनमें अटल श्रद्धा व भक्ति है। अकारण ही दंडित मेरे दादा के हाथों, उस मंत्रित जल को इस काली गौरैये पर छिड़कवाइये।''

तभी बाहर से लौटे वीरभद्र ने तुरंत महाराज को साष्टांग नमस्कार किया और विषय जानकर मंत्रित जल को काली गौरैये पर छिड़का। दूसरे ही क्षण उस काली गौरैये की जगह पर राजकुमार जयसिंह प्रत्यक्ष हुआ।

बहुत ही खुश होते हुए राजा धीरसिंह ने कहा, ''वीरभद्र, मुझे इस बात का दुख है कि मैंने अकारण ही तुम्हें नगर बहिष्कार की सज़ा सुनायी।''

वीरभद्र ने विनयपूर्वक कहा, ''प्रभु, आपने उस दिन मुझे जो दंड दिया वह आजयुवराज के लिए वरदान साबित हुआ। मेरे लिए इससे बढ़कर खुशी क्या हो सकती है।''

जयसिंह ने अपने पिता को सविस्तार बताया कि जब वह काली गौरैया था, तब चंद्रहासिनी ने उसे कितने लाड़-प्यार से पाला-पोसा। फिर उसने कहा, ''आप और दादा वीरभद्र की अनुमति हो तो मैं चंद्रहासिनी से विवाह करूँगा।''

''पहले चंद्रहासिनी से पूछो कि क्या उसकी अनुमति मिलेगी?'' मुस्कुराते हुए राजा ने कहा।

चंद्रहासिनी ने लज्जा के मारे सिर झुका लिया और वीरभद्र के पीछे जाकर खड़ी हो गयी।

इस घटना के एक महीने के अंदर ही युवराज जयसिंह से चंद्रहासिनी का विवाह वैभवपूर्वक संपन्न हुआ।

जयानन्द और बसन्त आश्रम वापस लौट जाते हैं।

राजा की मृत्यु के विषय में किसी को जानने की जरूरत नहीं है।

वे हमारे आन्दोलन के बहुत शक्तिशाली आधार थे।

तुम्हें मंत्री मानवेन्द्र से अवश्य मिलना चाहिये। वे तुम्हारा मार्ग-दर्शन करेंगे।

वे अमृतपुरी में हैं।

वसन्त, मैंने इसका नाम आर्य रखा है।

राजकुमार ! कृपया मेरा अभिवादन स्वीकार कीजिये।

मुझे राजकुमार न कहें। मैं आपका मित्र हूँ।

कुछ समय के लिए आन्दोलन बन्द कर दो। आर्य को यहीं पलने दो। राज्य की गतिविधियों के बारे में इसे बताते रहो।

मेरे आदमियों का क्या होगा, ऋषिवर!
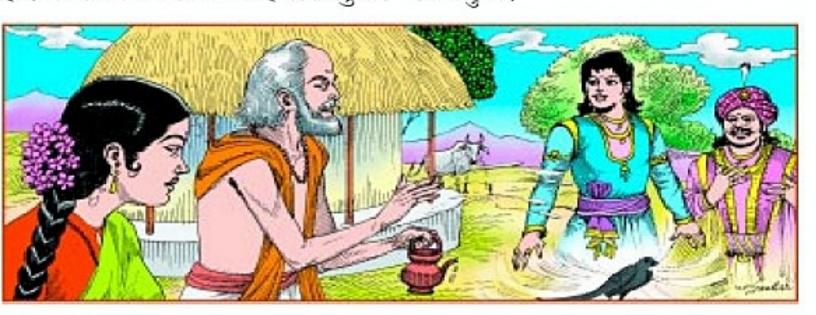
इस बीच बसन्त के आदमी जमीन्दारों से चावल लूटने की, वीर सिंह के सिपाहियों की सारी कोशिश को नाकामयाब कर देते हैं, जिससे वीर सिंह का क्रोध और भड़क जाता है।

आर्य, तुम हम सब के लिए कितने महत्वपूर्ण हो!
तुम्हें और जल्दी-जल्दी मिलते रहना चाहिये!
वसन्त प्रजा के लिए बहुत कुछ कर रहा है। तुम उनके नेता बनोगे!
मेरी अभी भी इच्छा है कि मैं इसी वक्त उनके साथ सम्मिलित हो जाऊँ!
आर्य जैसे-जैसे बड़ा हो रहा है, वैसे-वैसे धनुर्विद्या तथा युद्धकौशल के अभ्यास पर अधिक से अधिक समय दे रहा है। आश्रम के शिष्य उसकी निगरानी करते रहते हैं।
वीर सिंह नये सेनापति के साथ बैठक करता है।
जबर सिंह, विद्रोही कहाँ हैं?
लगता है, वे हर रोज अपने छिपने का अड्डा बदल देते हैं।
हम लोगों ने पर्वतीय इलाकों की जाँच कर ली है। सभी गुफाएँ वीरान हैं।
क्या वे हमारा राज्य छोड़ कर चले गये? लेकिन वे जायेंगे कहाँ?
महाराज, जंगल खुले होते हैं। वहाँ उनके अड्डे नहीं हो सकते!
क्या जंगलों में उन्हें तलाश किया, जबर?

हम संयोग के भरोसे नहीं रहेंगे। हम जंगलों को छान मारेंगे।
मैं खुद सैनिकों का नेतृत्व करूँगा, जब्बर! इसे शिकार - अभियान बना दो।
वीर सिंह शिकार पर जाता है। सैनिक जंगल को घेर लेते हैं और जानवरों को भगाने के लिए नगाड़े बजाते हैं।
आर्य, आज आश्रम से बाहर मत जाना।
बाघा, बाघी, आश्रम का ध्यान रखना।
भालुकी आर्य को देखने के लिए बाहर निकलती है।
भालुकी पकड़ी जाती है। सैनिक खुशी से पागल हैं।
रुक जाओ !
कौन? क्यों?
क्रमशः

एक हरा-भरा संसार

वीना अपने दादा-दादी के गाँव में छुट्टियाँ मना रही है। अपने चारों ओर की हरियाली देख कर वह मुग्ध है। अपने दादा-दादी के बाग में हमेशा बृक्षों की काफी छाया रहती है। आम के पेड़ के नीचे लेट कर पुस्तक पढ़ने में तथा उससे भी अच्छा, शाखाओं पर चीं चीं करती गिलहरियों की उछल-कूद देखने में कितना आनन्द आता है!

''गाँव में रहना तुम्हें कैसा लग रहा है, वीना?'' दादा ने एक दिन पूछा।

''एक दम अद्भुत लग रहा है दादा जी!'' वीना कहती है। ''बाग में खेलना कितना मजेदार लगता है। मैंने इससे पूर्व एक ही स्थान पर इतने पेड़ कभी नहीं देखे।''

''पेड़ मनुष्य के सबसे अच्छे दोस्त हैं, लेकिन वह इस बात को महसूस नहीं करता। कैसी नासमझी है!'' दादा जी कहते हैं। ''ऐसा आप क्यों कहते हैं, दादा जी?'' वीना पूछती है।

''क्यों नहीं कहें? वे हमें फल देते हैं, जलावन और उपस्कर के लिए लकड़ी देते हैं और पशुओं के चारे के लिए पत्तियाँ देते हैं। बृक्ष का हर भाग मनुष्य के लिए उपयोगी है।''

''मुझे नहीं मालूम था, दादा जी,'' वीना स्वीकार करती है।

उसकी दादी बातचीत में शामिल हो जाती है। 'मेरी बच्ची, संसार को हरा-भरा और सुन्दर बनाये रखने के लिए तुम्हें कुछ अपना योगदान अवश्य करना चाहिये।''

''यह कैसे कर सकती हूँ दादी जी, बताइये,''वीना कहती है।

''क्या तुम्हें मालूम है कि इस बाग में इतने सारे पेड़ कैसे आ गये? तुम्हारे दादा जी और मैंने अनेक अवसरों पर इन्हें रोपा है। इस आम के पेड़ को तब रोपा गया था जब तुम्हारी माँ का जन्म हुआ था। यह अंजीर बृक्ष तुम्हारे जन्म दिवस पर लगाया गया। इनमें से हरेक पेड़ के पीछे एक इतिहास है।''

वीना ने बहुत उपयोगी सबक सीख लिया।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

लेखनी के लिए निर्झरणी

लिखाई के प्रथम उपकरण थे लकड़ी के कोयले के टुकड़े! प्रथम लेखनी का आविष्कार मिस्रवासियों द्वारा किया गया। जो भी हो, सर्वाधिक परिष्कृत लेखनी को भी स्याही के दवात में डुबोना पड़ता था जिससे अक्षर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ें।

लेविस वाटरमैन नाम का जीवन बीमा का एक ब्रोकर इस प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं था। वह हमेशा सोचता रहता था कि ऐसी लेखनी बनाना क्यों सम्भव नहीं है, जिसमें स्याही का अपना पात्र हो जहाँ से स्याही का प्रवाह व्यवस्थित किया जा सके।

यद्यपि वह वैज्ञानिक नहीं था, फिर भी, उसने शीघ्र ही अनुभव किया कि संभरण-यंत्र विन्यास में हवा के लिए एक सुराख तथा तीन खाँचा जोड़ कर स्याही के प्रवाह को नियमित किया जा सकता है। उसने सन् १८८४ में इसका पेटेण्ट अधिकार ले लिया।

तुम्हारा प्रतिवेश

उन्मत लकड़बग्घा

जब बिल्ली म्याऊँ करती है और कुत्ता भौंकता है, तब लकड़बग्घा, जो आंशिक रूप से बिल्ली और कुत्ता दोनों है, क्या करता है? यह हँसता है। अथवा ऐसा लगता है, जब यह विचित्र जन्तु आवाज निकालना चाहता है - कम से कम दूर से।

लकड़बग्घे के पैर खास करके कुत्ते के समान होते हैं। शरीर के अन्य भाग बिल्ली से मिलते-जुलते हैं। जो भी हो, इसका शरीर अनगढ़ होता है, सशक्त बिल्ली या सुन्दर कुत्ते की तरह सुघड़ नहीं होता। सिर बल्कि बड़ा होता है और कान खड़े होते हैं। क्योंकि पिछले पैर भारी और छोटे होते हैं, इसका पिछला हिस्सा थोड़ा झुक जाता है। यह १५० से.मी. लम्बा और १० से.मी. ऊँचा होता है।

लकड़ बग्घा शायद ही कभी शिकार करता हो। वह दूसरे जानवरों के जूठन पर निर्वाह करता है। इस आदत के कारण इसे 'पशु जगत का झाड़ूवाला'' की उपाधि दी गई है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

कुत्ते अधिक स्वामिभक्त क्यों होते हैं?

जब से कुत्तों को पालतू बनाया गया है, उन्होंने प्रमाणित किया है कि वे मनुष्य के सचमुच सबसे अच्छे दोस्त हैं। बिल्ली की स्वामिभक्ति उसके सामने कुछ नहीं है। कुत्ते भेड़ियों के वंशज हैं जो गिरोही पशु होते हैं। उनके सुरक्षित बचे रहने का रहस्य है एक साथ मिल कर रहना। इसके अतिरिक्त वे गिरोह के नेता के अनुगमन करने के आदी होते हैं। इसलिए जब वे पालतू हो जाते हैं तब वे अपने स्वामी को नेता मानने लगते हैं और मालिक के प्रति पूरी स्वामिभक्ति दिखाते हैं। बिल्ली अकेले शिकार करती है। उनके लिए सुरक्षित बचे रहना इस बात पर निर्भर करता है कि उनका घरेलू क्षेत्र कितना परिचित है। वे घरों के प्रति वफादार होते हैं, लेकिन शायद ही कभी अपने मालिकों के प्रति स्वामिभक्ति दिखाते हों।

अपने भारत को जानो

अक्तूबर पर्वों का महीना है। यहाँ पर्वों पर एक प्रश्नोत्तरी दी जा रही है।

१. किस राज्य में तीज त्योहार मनाया जाता है?

a) आसाम b) झारखण्ड

c) राजस्थान d) मिसोराम

२. बिष्णु का कौन-सा अबतार केरल के ओनम पर्व से सम्बन्धित है?

a) बामन b) परशुराम

c) कृष्ण d) नरसिंह

३. कार्तिक पूर्णिमा के दिन किसका जन्म दिन मनाया जाता है?

a) महाबीर b) बुद्ध

c) गुरु नानक d) जोरोस्टर

४. किस पर्ब के लिए मैसूर प्रसिद्ध है?

a) दुर्गा पूजा b) दशहरा

c) कुम्भमेला d) पोंगल

(उत्तर पृष्ठ ७८ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

SOURAA

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा,
जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

अगस्त अंक के पुरस्कार विजेता हैं :
शिल्पा पाटनी
C/o. विकास पाटनी
स्टेशन रोड, झुमरीतिलैया
कोडरमा. झारखंड

विजयी प्रविष्टि

माँ का साथ है सबसे न्यारा
हाथी मेरा साथी प्यारा

'अपने भारत को जानो' के उत्तर

१.राजस्थान
२. वामन
३. गुरु नानक
४. दशहरा

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (HINDI) OCTOBER 2004
REGD NO. TN/PMG(CCR)-594/03-05
REGD. WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER FOR INDIA NO. 1087/57
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO. 381/03-05 FOREIGN - WPP. NO. 382/03-05